अनुभूति

2019 वार्षिक पत्रिका

अंक 16

तेउविबो
OIDB

तेल उद्योग विकास बोर्ड

हिन्दी में लिखें

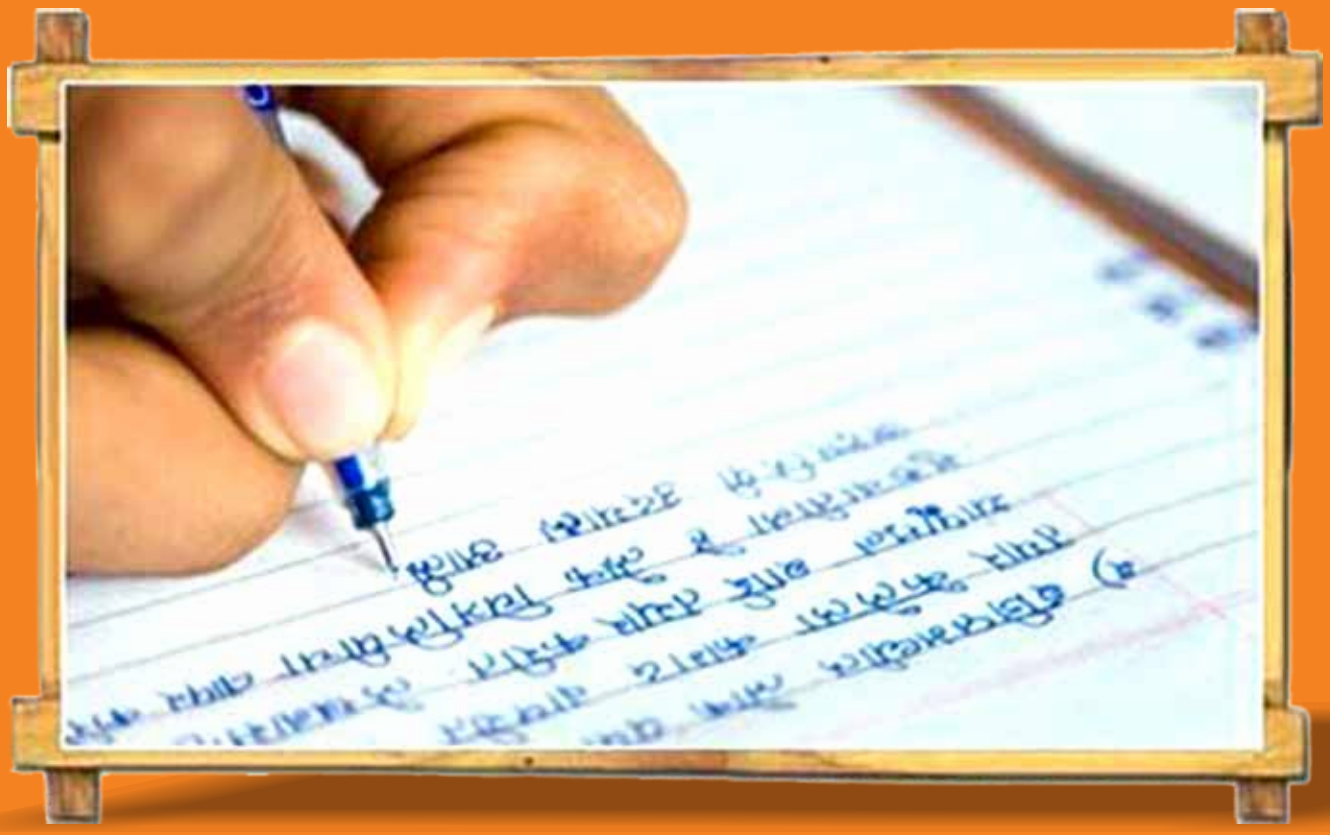

अच्छा लगता है!

"अनुभूति"

राजभाषा पत्रिका

अंक 16

संरक्षक

डॉ. निरंजन कुमार सिंह,
आई.एफ.एस
सचिव, तेल उद्योग विकास बोर्ड
एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संपादक मंडल

श्री गौतम सेन

श्री गणेश डोभाल

संपादक

श्रीमती ज्योति शर्मा

दूरभाष सं0.–0120–2594602

2594632, 2594604, 2594612,

फैक्स : 0120–2594630

ई–मेल : hindi.oidb@nic.in

संपादकीय

अनुभूति का नया अंक ये, लेकर नया अनुभव है आया
अनुभव कभी मन के भावों का, कभी समाज के सत्यों का

नया मंच है नया कलेवर, लेकर नई उमंग है आया
सबने अपने अनुभवों को, नया रूप है पहनाया
कहीं लेख में, कहीं कविता में, नया रंग है भर आया
अनुभूति का नया अंक ये, लेकर नया अनुभव है आया।

राजभाषा विभाग के दायित्वों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन देने के लिए पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन करना भी एक महत्वपूर्ण दायित्व है। हमें प्रसन्नता है कि तेल उद्योग विकास बोर्ड अपनी पत्रिका अनुभूति के माध्यम से इस दायित्व का निर्वाह करता है।

पत्रिका के इस अंक में लेख, कविताओं एवं ज्ञानवर्धक कहानियों के साथ–साथ राजभाषा गतिविधियों एवं अन्य गतिविधियों का भी संकलन है। तेल उद्योग विकास बोर्ड द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार तथा प्रोत्साहन में लगातार 15 वर्षों से अपना योगदान देती आ रही है।

अनुभूति का 16वां अंक, आप सबके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है। आशा है पिछले अंक की भांति इस अंक को भी आपका भरपूर स्नेह और प्यार मिलेगा।

"अनुभूति" प्रतिवर्ष तेल उद्योग विकास बोर्ड (तेउविबो), प्लॉट सं0.2, सेक्टर 73, नोएडा से प्रकाशित की जाती है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों के कथनों और मतों के लिए बोर्ड उत्तरदायी नहीं है।

तेल उद्योग विकास बोर्ड के लक्ष्य एवं उद्देश्य

- तेल उद्योग विकास निधि का प्रबन्धन।
- तेल उद्योग के विकास के लिए वित्तीय तथा अन्य सहायता देना।
- निम्नलिखित कार्यकलापों के लिए अनुदान एवं ऋण और इक्विटी निवेश में सहायता देना:–

- भारत के भीतर अथवा बाहर खनिज तेल की संभावनाओं की खोज एवं अन्वेषण करने;
- कच्चे तेल के उत्पादन,संचालन,भंडारण और परिवहन की सुविधाओं की स्थापना;
- पेट्रोलियम और पेट्रोलियम उत्पादों के परिशोधन एवं विपणन;
- पेट्रोरसायन और उर्वरकों के निर्माण और विपणन;
- वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीय तथा आर्थिक अनुसंधानों, जो तेल उद्योग के लिए प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उपयोगी हों;
- तेल उद्योग के किसी भी क्षेत्र में प्रयोगात्मक या प्रायोगिक अध्ययन;
- तेल उद्योग में लगे या तेल उद्योग में लगने वाले किसी भी क्षेत्र के अन्य कामों में लगे कर्मियों को भारत में या विदेशों में प्रशिक्षण तथा अन्य विहित उपायों के लिए।

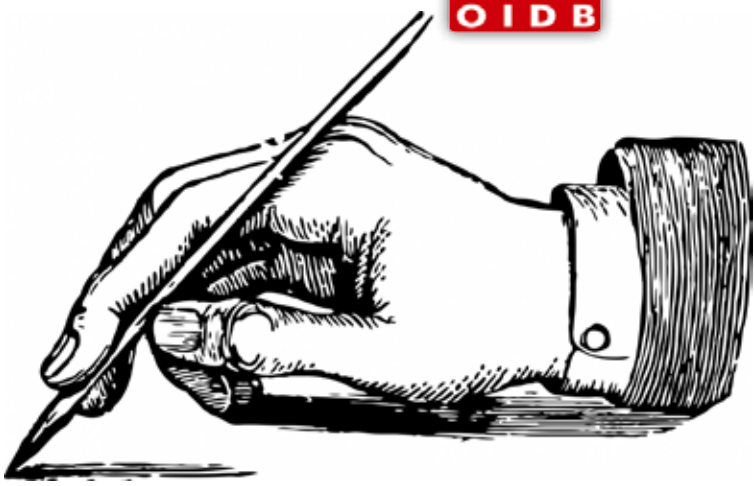

सचिव की कलम से

प्रसन्नता का विषय है कि तेल उद्योग विकास बोर्ड 1974–75 में अपने गठन से ही अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों के लिए तेल क्षेत्र की सार्वजनिक कम्पनियों को ऋण एवं अनुदान प्रदान कर रहा है, अपने प्रमुख दायित्वों के साथ–साथ राजभाषा संबंधी दायित्वों का भी निर्वाह कर रहा है।

राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी अन्य कार्यकलापों के साथ–साथ तेल उद्योग विकास बोर्ड गृह पत्रिका 'अनुभूति' का भी प्रकाशन करता है। कार्यालय द्वारा राजभाषा पत्रिकाओं के प्रकाशन से सभी सरकारी कार्मिकों एवं हिंदी प्रेमियों को अपनी लेखनी के माध्यम से सृजनात्मक अभिव्यक्ति का सुअवसर तो मिलता ही है साथ ही साथ राजभाषा नीति के उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए एक सार्थक मंच की भी प्राप्ति होती है।

मैं, 'अनुभूति' के 16वें अंक के प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं रचनाकारों को बधाई देता हूं। मुझे विश्वास है कि अनुभूति का यह अंक हिंदी के प्रचार प्रसार में अपनी अग्रणी भूमिका निभाएगा।

शुभकामनाओं सहित,

नि० कु० सिंह

डॉ. निरंजन कुमार सिंह (आई एफ एस)
सचिव, तेल उद्योग विकास बोर्ड एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

करो अपनी भाषा पर प्यार

करो अपनी भाषा पर प्यार ।
जिसके बिना मूक रहते तुम, रुकते सब व्यवहार ।।
जिसमें पुत्र पिता कहता है, पत्नी प्राणाधार,
और प्रकट करते हो जिसमें तुम निज निखिल विचार ।
बढ़ायो बस उसका विस्तार ।
करो अपनी भाषा पर प्यार ।।
भाषा बिना व्यर्थ ही जाता ईश्वरीय भी ज्ञान,
सब दानों से बहुत बड़ा है ईश्वर का यह दान ।
असंख्यक हैं इसके उपकार ।
करो अपनी भाषा पर प्यार ।।
यही पूर्वजों का देती है तुमको ज्ञान-प्रसाद,
और तुम्हारा भी भविष्य को देगी शुभ संवाद ।
बनाओ इसे गले का हार ।
अपनी भाषा पर प्यार ।।
करो अपनी भाषा पर प्यार ।।

-मैथिली शरण गुप्त

विषय सूची

क्रमांक	विवरण		पृष्ठ संख्या
1	**लेख**		
	1	पर्यावरण बचाओ	6
	2	फादर कामिल बुल्के	8
	3	प्लास्टिक को कहें न	10
	4	आओ लौट चलें पारम्परिक भोजन की ओर	12
	5	भारत की कुछ सशक्त महिलाएं	14
2	**कविता**		
	1	चिन्तन के कुछ क्षण	17
	2	अन्तर्मन से हुआ प्रणयन	17
	3	हिंदी मातृभाषा	18
	4	क्यों हो गये हम जुदा की आज जोड़ने की बात होती है	18
	5	पिता जी के लिए उनके श्राद्ध पर कविता	19
	6	हर दोस्त कोहिनूर होता है	20
	7	स्वच्छ भारत अभियान	20
	8	रिटर्न टिकट "तो कंफर्म है"	20
	9	ससुराल कितना भी प्यारा हो	21
	10	स्त्री	21
	11	प्यारी बेटी	21
	12	बेटी	21
3	**कहानी**		
	1	जो समझ गया वो तर गया	22
	2	दिल की चाबी	23
	3	दुःख के समय खुद को बड़ा कर लो	23
	4	ईमानदारी	24
	5	ईश्वर से प्रेम	25
4	**विविध**		
	तेल उद्योग विकास बोर्ड में राजभाषा संबंधी गतिविधियां एवं अन्य गतिविधियां		26
	अब जरा हंस लें		32

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के निजी विचार हैं। संपादक मंडल अथवा तेल उद्योग विकास बोर्ड का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है

पर्यावरण बचाओ

पर्यावरण शब्द का निर्माण दो शब्दों से मिल कर हुआ है। ''परि'' जो हमारे चारों ओर है'' आवरण'' जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है। पर्यावरण का सीधा सम्बन्ध प्रकृति से है। अपने परिवेश में हम तरह–तरह के जीव–जन्तु, पेड़–पौधे तथा अन्य सजीव–निर्जीव वस्तुएँ पाते हैं। ये सब मिलकर पर्यावरण की रचना करते हैं। वास्तव में सजीव तथा निर्जीव दो संघटक मिलकर प्रकृति का निर्माण करते हैं। इन संघटकों के मध्य एक महत्वपूर्ण रिश्ता यह है कि अपने जीवन–निर्वाह के लिए परस्पर निर्भर रहते हैं। जीव–जगत में यद्यपि मानव सबसे अधिक सचेतन एवं संवेदनशील प्राणी है तथापि अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वह अन्य जीव–जन्तुओं, पादप, वायु, जल तथा भूमि पर निर्भर रहता है।

पर्यावरण, ईश्वर द्वारा प्रदत्त एक अमूल्य उपहार है जो संपूर्ण मानव समाज का एकमात्र महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है। यदि मानव समाज प्रकृति के नियमों का भलीभाँति अनुसरण करें तो उसे कभी भी अपनी मूलभूत आवश्यकताओं में कमी नहीं रहेगी लेकिन मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इसका दोहन करता आ रहा हैं।

वर्तमान युग औद्योगिकीकरण और मशीनीकरण का युग है। जहाँ आज हर काम को सुगम और सरल बनाने के लिए मशीनों का उपयोग होने लगा हैं, वहीं पर्यावरण का उल्लंघन भी हो रहा हैं। पृथ्वी का प्राकृतिक असुंतलन, पिघलते हिम शिखर, पृथ्वी और समुद्री जीवों पर मंडराते खतरे के काले बादल, बाढ़ और सूखे का बढ़ता प्रकोप ये सब प्राकृतिक आपदाएं हमें सकेंत दे रही है अगर हम अब भी नहीं जागे, तो कब जागेंगे? मानव निरन्तर प्रकृति का दोहन करने में लगा है। पहाड़ों में पानी रोका जा रहा है। बांध बनाए जा रहे हैं। जंगलों की कटाई की जा रही है। इसका असर यह हो रहा है कि भूस्खलन हो रहे है। कहीं जरूरत से ज्यादा बाढ़ तो कही सूखा पड़ रहा है। पर्यटक पहाड़ों में गंदगी और प्लास्टिक कचरा फैला रहे हैं। प्रकृति का बेहिसाब दोहन के कारण वह समय–समय पर अपना विकराल रूप दिखा रही है। पंत जी ने सही कहा है –

दूषित वायु, दूषित जल, कैसे हो जीवन मंगल।
क्षीण आयु, क्षुब्ध जन, कैसे हो जन्म सफल ।।

ऐसे प्रदूषित वातावरण में मंगल जीवन की कामना कैसे की जा सकती है मानव जीवन के लिए पर्यावरण संरक्षण बहुत जरूरी है। हमारी धरती स्वर्ग थी। वन–उपवन से हरी–भरी थी। पेड़ पौधों वृक्ष लताओं से समृद्ध थी, इसीलिए वायुमंडल शुद्ध था। हवा की पावन सुगंध जनजीवन को सुगंधित करती थी। जैसे– जैसे जनसंख्या बढ़ी और जन सुख सुविधाओं के लिए औद्योगिक संस्थाओं ने अपने पैर तेजी से पसारे जिसका परिणाम यह हुआ कि धरती पर प्रदूषण बढ़ता गया।

प्रकृति जो हमें जीने के लिए स्वच्छ वायु, पीने के लिए साफ शीतल जल और खाने के लिए कंद–मूल–फल उपलब्ध कराती रही है, वही अब संकट में है। लगभग 100–150 साल पहले धरती पर घने जंगल थे, कल–कल बहती स्वच्छ सरिताएं थीं। निर्मल झील व पावन झरने थे। हमारे जंगल तरह–तरह के जीव–जंतुओं से आबाद थे आज ये सब ढूंढ़े नहीं मिलते, नदियां प्रदूषित हैं। झील झरने सूख रहे हैं। जंगलों से पेड़ और वन्य जीव गायब होते जा रहे हैं। शहरों की हवा तो बहुत ही प्रदूषित हो गई है, जिसमें हम सभी का योगदान है। शहरी हवा में सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड जैसी जहरीली गैसें

घुली रहती हैं। विकास की आंधी में पर्यावरण नष्ट हो गया और आज वातावरण कुछ ऐसा हो गयाः

धीरे–धीरे आच्छादन हटने लगा धरातल से ।
जागी वनस्पतियां अलसाई मुख धोती शीतल जल से ।।

वर्तमान परिस्थिति के लिए मुख्य रूप से हमारी कथनी और करनी का कर्म ही जिम्मेदार है। एक ओर हम पेड़ों की पूजा करते हैं तो वहीं उन्हें काटने से जरा भी नहीं हिचकते। हमारी संस्कृति में नदियों को मां का दर्जा दिया गया है, परंतु उन्हीं मां स्वरूपा गंगा–जमुना, महानदी की हालत किसी से छिपी नहीं है। इनमें हम शहर का सारा जल–मल, कूड़ा–कचरा, हार फूल यहां तक कि शवों को भी बहा देते हैं। परिणामस्वरूप अब देश की सारी प्रमुख नदियां गंदे नालों में बदल चुकी हैं। पेड़ों को पूजने के साथ उनकी रक्षा का संकल्प भी हमें उठाना होगा।

पर्यावरण रक्षा के लिए कई नियम भी बनाए गए हैं। पर्यावरणीय नियम का न्यायालय या पुलिस के डंडे के डर से नहीं बल्कि दिल से सम्मान करना होगा। पारिस्थितिकीय संकटों से उबरने और स्वस्थ पर्यावरण के लिए इन प्राकृतिक धरोहरों की सुरक्षा करना आवश्यक है, आवश्यकता है पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण के साथ संतुलन का एकनिष्ठ भाव निहित हो। आज के समय में ना तो हमारे पास पीने का शुद्ध पानी है ना ही सांस लेने के लिए स्वच्छ वायु और ना ही फसल उगाने के लिए प्रदूषण मुक्त भूमि, प्रदूषण के कारण हमारे पृथ्वी का प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता काफी बुरे तरीके से प्रभावित हो रही है जो मनुष्य के स्वास्थ्य को प्रत्यक्ष रुप से प्रभावित करती है।

सत्य है जब तक वातावरण शुद्ध नहीं होता हम लम्बी आयु और स्वस्थ्य जीवन की कामना नहीं कर सकते। पर्यावरण की रक्षा करना हम सब की नैतिक जिम्मेदारी है, जिसे बल प्रयोग से नहीं बुद्धि और विवेक से अपनाने की ज्यादा जरूरत हैं। यदि पर्यावरण इसी तरह प्रदूषित होता रहा तो आने वाले भविष्य में इसके हमारे स्वास्थ्य और पर्यावरण पर काफी गंभीर नकरात्मक प्रभाव देखने को मिलेंगे। भविष्य में स्वस्थ जीवन को बनाये रखने के लिए इन तेजी से फैल रहे प्रदूषणों को नियंत्रित करने की आवश्यकता है। अगर हम अपने आने वाली पीढ़ीयों के लिए एक अच्छा पर्यावरण चाहते है तो हमें इसके लिए कड़े कदम उठाते हुए प्रदूषण को रोकने की आवश्यकता है ताकि पृथ्वी के पर्यावरण को स्वच्छ बनाया जा सके।

–गणेश डोभाल

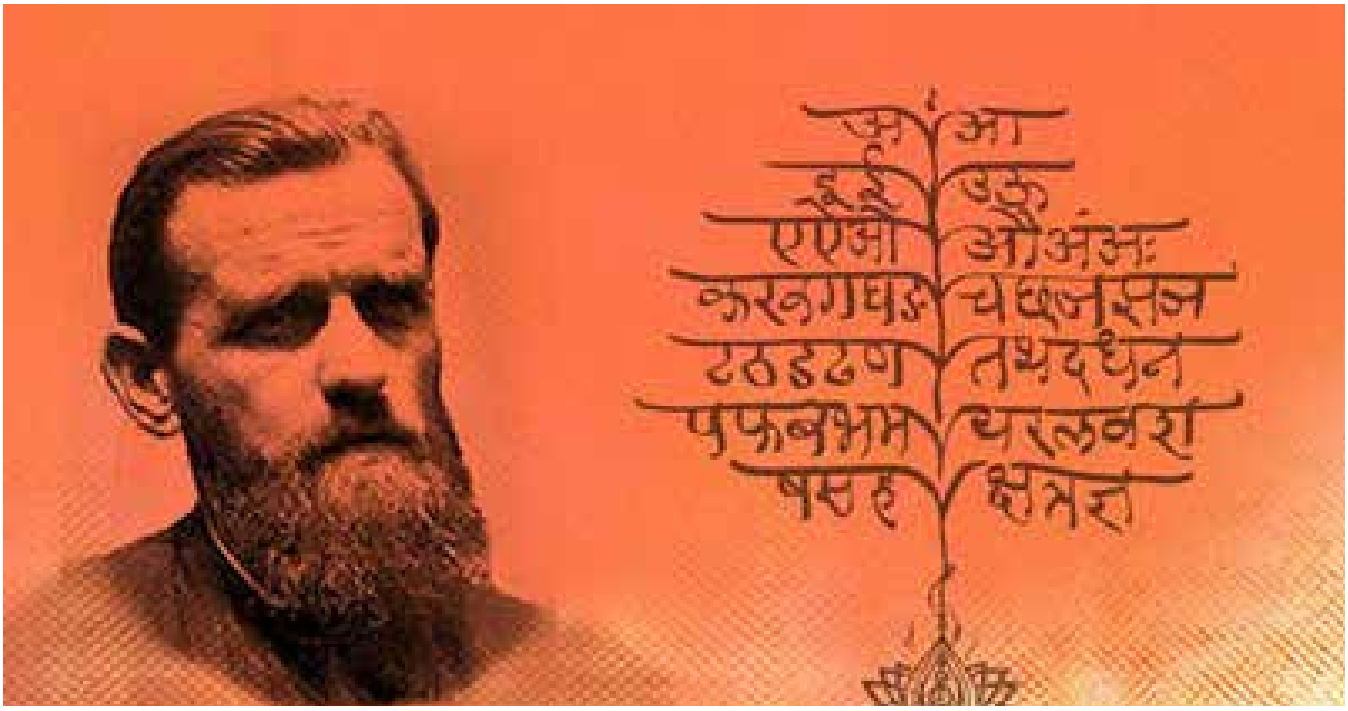

फादर कामिल बुल्के : हिन्दी के अनन्य साधक

कहा जाता है कि लॉड थॉमस मैकाले वह शख्स था जिसने 1835 ई. में देशी भाषाओं की जगह अग्रेंजी को भारतीय शिक्षा का मुख्य माध्यम बना डाला। मैकाले के सुझाव पर ही अग्रेंजों ने अपनी भाषा और ज्ञान विज्ञान को भारत पर थोपा। हालाँकि मैकाले की इस सोच से भारतीय तो छोड़िए, कई यूरोपीय लोग ही सहमत नहीं हुए। वहाँ के कई ऐसे विद्वानों ने अपना सम्पूर्ण जीवन यहाँ के ज्ञान–विज्ञान और भाषा को सँवारने में लगा दिया। फादर कामिल बुल्के इन्हीं विभूतियों में से एक थे। इसे संयोग ही कहा जा सकता है कि मैकाले की शिक्षा और भाषा नीति के लागू होने के ठीक 100 साल बाद कामिल बुल्के पहली बार भारत आए और यहां के होकर रह गए। हालाँकि उन्हें यहाँ ईसाई धर्म–प्रचार के लिए भेजा गया था। लेकिन यहाँ आने पर उन्हें भारतीय भाषाओं, विशेषकर हिन्दी ने ऐसा मोहित किया कि उन्होंने अपना पूरा जीवन हिन्दी की सेवा में खपा दिया। बेल्जियम में एक सितम्बर 1909 को पैदा हुए फादर बुल्के ने सन् 1950 ई. में भारत की नागरिकता ली थी। कामिल बुल्के के पिता का नाम अडोल्फ और माता का नाम मारिया बुल्के था। अभाव और संघर्ष भरे अपने बचपन के कठिन दिनों के बावजूद फादर बुल्के ने अपनी पढ़ाई नहीं छोड़ी। हिन्दी की अप्रतिम सेवा के लिए उन्हें सन् 1974 में देश के तीसरे सर्वोच्च सम्मान पद्मभूषण से नवाजा गया।

मातृभाषा से अटूट प्रेम करने वाले शख्स

फादर कामिल बुल्के ने लिखा है कि जब वे भारत पहुँचे तो उन्हें यह देखकर दुख और आश्चर्य हुआ कि पढ़े–लिखे लोग भी अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं से अनजान थे। वे अग्रेंजी बोलना गर्व की बात समझते थे। तब उन्होंने निश्चय किया कि वे यहाँ की बेहद समृद्ध देशज भाषा की महता को सिद्ध करेंगे। हालाँकि कामिल बुल्के का यहाँ की भाषाओं से यह लगाव अनायास नहीं था। वे अपनी मातृभाषा से भी अटूट प्यार करते थे। इसे उनके मूल देश की कहानी से भी समझा जा सकता है। वे उत्तरी बेल्जियम के रहने वाले थे, जहाँ फ्लेमिश बोली जाती थी। यह डच भाषा का ही स्थानीय संस्करण थी। लेकिन वहाँ के दक्षिणी प्रदेश में फ्रेंच का दबदबा था, जो बेल्जियम के शासकों और सम्भ्रान्त लोगों की भाषा थी। इस वजह से स्थानीय भाषा और फ्रेंच में अक्सर संघर्ष की स्थिति बनी रहती थी।

कामिल बुल्के जब कॉलेज में थे तो फ्रेंच के इस दबदबे को लेकर वहाँ एक बड़ा आंदोलन हुआ। उन्होंने इस आंदोलन

में बढ़–चढ़कर भाग लिया। इससे न केवल कॉलेज बल्कि पूरे इलाके में एक छात्र नेता के तौर पर उनकी पहचान बन गई थी। उस आंदोलन ने उनके अन्दर अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति प्रेम की आदत डाल दी। इसी आदत ने भारत आने पर उनके जीवन की दशा–दिशा तय की। उन्होंने जब निश्चय किया कि भारत ही उनकी कर्मभूमि रहेगी तो उन्होंने यहाँ की भाषा पर अधिकार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

बुद्धि से बेहद कुशाग्र कामिल बुल्के ने केवल पाँच साल में न केवल हिन्दी, बल्कि यहाँ की सभी उत्तर भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत पर पूरा अधिकार कर लिया। उन्होंने अवधी, ब्रज, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश की भी अच्छी जानकारी हासिल कर ली। उन्होंने 1950 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अपनी पीएचडी के लिए शोध प्रबन्ध अग्रेंजी के बजाय हिन्दी में ही लिखा। उनसे पहले देश के सभी विश्वविद्यालय में अग्रेंजी के अलावा दूसरी भाषाओं में शोध प्रबन्ध लिखने का नियम नहीं था। हालाँकि वे स्वयं अग्रेंजी, फ्रेंच, जर्मन, लैटिन और ग्रीक भाषाओं में सहज थे। लेकिन उन्होंने अपने गाइड और हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान माता प्रसाद गुप्त से स्पष्ट कह दिया कि वे शोध–प्रबन्ध लिखेंगे तो हिन्दी में ही लिखेंगे।

हिन्दी भाषा के प्रति किसी विदेशी छात्र के इस लगाव ने तमाम लोगों को अचम्भित कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि विश्वविद्यालय को अपने नियमों में परिवर्तन करना पड़ा। इसके बाद ही देश के दूसरे विश्वविद्यालय में शोधकर्ताओं को अपनी भाषा में थीसिस जमा करने की अनुमति मिलने लगी।

फादर कामिल बुल्के ने दार्जिलिंग में एक संक्षिप्त प्रवास करने के पश्चात, तब के बिहार और अब के झारखंड को अपना कर्मभूमि बनाया था। प्रारम्भिक दिनों में गुमला में गणित पढ़ाने के बाद वे रांची के सन्त जेवियर्स कॉलेज में हिन्दी और संस्कृत के प्रोफेसर बन गए। हालाँकि बाद में उन्होंने स्वयं को पूरी तरह से हिन्दी साहित्य और भाषा के लिए समर्पित कर दिया। इसका परिणाम उनके द्वारा रचे गए कई अमूल्य ग्रंथ हैं।

अकादमिक दृष्टिकोण से उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति अग्रेंजी–हिन्दी शब्दकोश कही जाती है। आलोचकों के अनुसार यह अपने प्रकाशन के पचास साल बाद भी अग्रेंजी से हिन्दी में शब्दों का अर्थ बताने वाला सबसे बढ़िया कोश है। इसे उनकी तीस सालों की हिन्दी साधना का जीवन्त दस्तावेज भी माना जाता है। यही नहीं, उन्होंने इसके प्रकाशन के तेरह साल पहले एक हिन्दी–अग्रेंजी शब्दकोश भी तैयार किया था। ये दोनों ग्रन्थ एक समय इतने लोकप्रिय हो गए कि लगभग सभी विद्यार्थियों की दराजों में फादर कामिल बुल्के रचित ये ग्रंथ मिल ही जाते थे। ज्यादातर लोग तो उन्हें उनके शब्दकोशों के लिए ही जानते हैं। आलोचकों का मानना है कि उन्होंने इन ग्रंथों के माध्यम से हिन्दी भाषा की जितनी सेवा की, उसे बता पाना बहुत मुश्किल है।

फादर कामिल बुल्के की नजर में हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि तुलसीदास थे। तुलसीदास की रचनाओं को समझने के लिए उन्होंने अवधी और ब्रज तक सीखी। उन्होंने रामकथा और तुलसीदास और मानस–कौमुदी जैसी रचनाएँ तुलसीदास के योगदान पर ही लिखी थीं। यह जानकर आश्चर्य होता है कि किसी ईसाई मिशनरी की सर्वश्रेष्ठ कृति प्रसिद्ध हिन्दू देवता भगवान राम से संबंधित हो सकती है। लेकिन यह सच है कि अधिकतर आलोचकों की दृष्टि में फादर कामिल बुल्के रचित 'रामकथा : उत्पत्ति और विकास' उनकी सर्वश्रेष्ठ कृति है। यूँ तो उन्होंने इस विषय पर ही अपनी पीएचडी थीसिस जमा की थी। लेकिन इस विषय पर वे बाद में अठारह साल तक काम करते रहे। इस ग्रंथ के बारे में उनके गुरू और हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान डॉ धीरेन्द्र वर्मा ने लिखा, 'इसे रामकथा संबंधी समस्त सामग्री का विश्वकोश कहा जा सकता है। वास्तव में यह शोध पत्र अपने ढंग की पहली रचना है। हिन्दी क्या, किसी भी यूरोपीय या भारतीय भाषा में इस प्रकार का कोई दूसरा अध्ययन उपलब्ध नहीं है।' उन्होंने ईसाई धर्म के बारे में भी हिन्दी में कई ग्रंथ लिखे। उन्होंने हिन्दी में बाइबिल का अनुवाद भी किया था।

भारत आकर मृत्युपर्यंत हिंदी, तुलसी और वाल्मीकि के भक्त रहे। उन्होंने न केवल हिंदी को अपनाया, बल्कि भारत और भारतीयता को भी स्वीकार किया. भारतीय होने का उन्हें बड़ा गर्व था और भारत की हिंदी पर नाज था. इन्हें साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा सन् 1974 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

प्लास्टिक को कहें ना

आज हम अपने चारों ओर देखते हैं तो लगभग बहुत सी चीजें प्लास्टिक से बनी हुई दिखाई देती है। दिन की शुरूआत से लेकर रात में बिस्तर में जाने तक अगर ध्यान से गौर किया जाए तो हम पाएंगे कि प्लास्टिक ने किसी न किसी रूप में हमारे हर पल पर कब्जा कर रखा है। सुबह के ब्रश से लेकर या ऑफिस में दिन भर कम्प्यूटर पर काम, बाजार से कोई सामान लाना हो या टिफिन और पानी की बोतल में खाना और पानी लेकर चलना। प्लास्टिक हर जगह है, हर समय है।

प्लास्टिक की खोज के क्षेत्र में कई वैज्ञानिकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 1600 ई.पू. सबसे पहले प्लास्टिक प्राकृतिक सामग्री जैसे, प्राकृतिक रबर, नाइट्रोसेल्युलोज, कोलेजन, गैलेलाइट से बनाया गया। सन 1900 में पूरी तरह से सिंथेटिक थर्मोसेट, फिनोल और फॉर्मलडिहाइड का उपयोग करके प्लास्टिक बनाना चालू किया और दिन–प्रतिदिन इसकी मांग बढ़ती गई। प्लास्टिक के द्वारा बनाई गई चीजें न तो जल्दी टूटती, न हीं लकड़ी या कागज की तरह सड़ती, प्लास्टिक के ऊपर जल्दी से किसी वातावरण का कोई प्रभाव नहीं पड़ता इसलिए धड़ल्ले से प्लास्टिक का प्रयोग शुरू हो गया। रोजमर्रा के जीवन में प्लास्टिक ने अपनी जगह बना ली। लोगों ने भी इसे हाथोंहाथ लेना शुरू किया। जब प्लास्टिक या पॉलीथीन आदि का इस्तेमाल प्रारम्भ हुआ था उस वक्त यह किसी वरदान से कम नहीं था।

प्लास्टिक अपने उत्पादन से लेकर इस्तेमाल तक सभी अवस्थाओं में पर्यावरण और समूचे पारिस्थितिकी तन्त्र के लिए खतरनाक है। इसका निर्माण पेट्रोलियम पदार्थों से प्राप्त तत्वों–रसायनों से होता है, इसलिए यह उत्पादन अवस्था, प्रयोग के दौरान और कचरे के रूप में फेंके जाने पर कई तरह की रासायनिक क्रियाएँ करके विषैला असर पैदा करता है। विश्व के सामने प्लास्टिक से निपटने की गम्भीर चुनौती है। जिस प्लास्टिक ने हमारे जीवन को सरल बनाया था उसे हम अपने जीवन से सदा–सदा के लिये दूर कर देने पर विवश हैं।

पर्यावरण के लिए एक बहुत बड़ी समस्या

प्लास्टिक एक ऐसा पदार्थ है जिसका निवारण नहीं किया जा सकता यानि कि इसको खत्म नहीं किया जा सकता। आज प्लास्टिक व पॉलीथीन पर्यावरण एवं प्राणी जीवन के लिए एक बहुत बड़ी समस्या बन गयी है। हमारे वायुमंडल के लिए खतरा बन गया है। प्लास्टिक– पॉलिथीन के कारण ग्लोबल वार्मिंग का खतरा काफी बढ़ गया है।

सर्वाधिक नुकसान तो पॉलीथीन की थैलियों से हुआ है। इससे पशुओं को नुकसान प्रचुर मात्रा में हो रहा है। हम पॉलीथीन के बैग में सामान लाते हैं और फिर उसे कूड़े के ढेर में फेंक देते हैं। इसे जानवर खा जाते हैं और इससे उनकी मौत तक हो जाती है। पॉलीथीन को जलाने से कार्बन डाईऑक्साइड जैसी विषैली गैस उत्सर्जित होती है। इससे अनेक बीमारियां पैदा होती है। इससे निकलने वाला हाइड्रोकार्बन कैंसर जैसी बीमारी का कारक है। पॉलीथीन के दुष्प्रभाव से एक वर्ष में ही लाखों जीवों की मौत हो जाती है। प्लास्टिक को नष्ट करने का कोई भी कारगार उपाय नहीं हैं। इसे मिट्टी में मिलने में एक हजार साल तक लग जाते हैं। इसको जलाने से इसमें से खतरनाक जहरीली गैस निकलती हैं, जिससे वायुमंडल पर बुरा असर पड़ता हैं। इसे मिट्टी में डंप करें तो मिटटी की उर्वरा शक्ति खत्म हो जाती हैं। इसे नाली, नदी या समुद्र में बहाने के कारण, बाढ़, सुनामी, जैसे हालात पैदा हो रहे हैं। हर साल लाखों समुद्री जीव, गाय, भैंस, पक्षी आदि इसे धोखे से खाकर अपनी जान गंवा देते हैं।

स्वास्थ्य के लिए हानिकारक

प्लास्टिक से होने वाले रोग में कैंसर प्रमुख रोग है क्योंकि प्लास्टिक के बर्तन में गर्म खाना रखने से प्लास्टिक के रासायनिक पदार्थ खाने में मिल जाते हैं और शरीर के अंदर पहुंचकर कैंसर, आंत संबंधी कई बीमारी पैदा कर सकते हैं। प्लास्टिक के ज्यादा प्रयोग से पर्यावरण और मानव जीवन पर असर पड़ रहा है, प्लास्टिक बनाने में जिन रासायनिक पदार्थों का इस्तेमाल किया जाता है वो मानव और जीव–जन्तुओं के लिए घातक हैं।

सरकार के साथ–साथ पर्यावरण को स्वच्छ बनाने में हमारा भी योगदान होना चाहिए। जब पृथ्वी, पेड़ और जल बचेगा, तब ही जीवन संभव है। लोग जागरूक होने के साथ प्लास्टिक का कम से कम इस्तेमाल करने की कोशिश कर रहे हैं। सरकार ने पर्यावरण की सुरक्षा के लिए प्लास्टिक को प्रतिबंधित किया है । आम लोगों को भी इसका सामाजिक बहिष्कार करने की जरूरत है। किसी भी रूप में इसका इस्तेमाल न करके, प्लास्टिक की जगह कपड़े, कागज और जूट से बने थैलों का प्रयोग करके, खाने की वस्तुओं के लिए स्टील या फिर मिट्टी के बर्तनों को प्राथमिकता देकर पूरी तरह प्लास्टिक को ना कहने का प्रण करें। समय आ गया है जब हम सबको एक साथ मिलकर प्लास्टिक प्रदूषण जैसे इस भयावह दानव का सामना करने की आवश्यकता है। अब प्लास्टिक का बहिष्कार करने का समय आ गया है अन्यथा प्रकृति विनाश की ओर बढ़ती चली जाएगी। हम में से हर एक व्यक्ति को इस समस्या के निवारण के लिये आगे आना होगा। और इसे रोकने में अपना बहुमूल्य योगदान देना होगा और प्लास्टिक को हर हाल में ना कहना होगा।

राजेश सैनी

आओ लौट चलें पारम्परिक भोजन की ओर

आयुर्वेद विशारद महर्षि चरक ने कहा कि 'त्रय उपसतम्भा आहाराः स्वपनोब्रह्मचर्यमिति' स्वस्थ रूपी शरीर को स्थिर रखने के लिए उपरोक्त तीन उपायों – आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य में सन्तुलन होना चाहिए। जीवन जीने के लिये समुचित मात्रा में शरीर को भोजन की आवश्यकता होती है किन्तु स्वस्थ जीवन जीने के लिये, शुद्ध पेय जल तथा संतुलित आहार की जरूरत होती है। हर देश का खानपान उसके मौसम के अनुरूप होता है। भारतीय भोजन हमें प्रकृति द्वारा दिया हुआ अनमोल खजाना है। यह भोजन हमारे देश के भौगोलिक परिवेश में बहुत फायदेमंद है। भारतीय खाने अपने मसालों के औषधीय और आयुर्वेदिक गुणों के कारण दुनिया के अन्य हिस्सों के खाने से ज्यादा पौष्टिक होते हैं इसलिए खाने में इन्हें डालने से न सिर्फ खाना स्वादिष्ट और खुशबूदार बनता है बल्कि ये मसाले कई तरह के रोगों से बचाते हैं। कुछ वर्ष पूर्व तक तो हर घर में पारंपरिक भोजन ही बनता था और शरीर को आवश्यक समस्त पोषक तत्व मिल जाते है।

पिछले कुछ वर्षों में फास्ट फूड का प्रचलन बढ़ गया है। फास्ट फूड का अर्थ है जल्दी तैयार होने वाला भोजन, कहीं भी, कभी भी खाया जाने वाला भोजन। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में फास्ट फूड ने अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। स्वाद से आकर्षित युवा वर्ग फास्ट फूड की अच्छाई या बुराई को समझे बिना उपयोग कर रहे हैं जिसका असर उनके मन मस्तिष्क तथा स्वास्थ्य पर पड़ता है। फास्ट फूड का अधिक उपयोग करने वाले लोग समय से पहले ही उच्च रक्तचाप, डायबिटीज जैसी बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। भागदौड़ भरी जिंदगी में हमारे खान–पान का तरीका बिगड़ जाता है। ऐसे में हम ब्रेकफास्ट से लेकर लंच और डिनर तक घर पर न करके फास्ट फूड से काम चला लेते हैं। पिज्जा, चाउमीन, बर्गर, हॉट डॉग, पेस्ट्री, समोसे, कोल्डड्रिंक आदि ढेरों ऐसे खाद्य पदार्थ हैं इस जंक फूड के बारे में सोचकर ही हमारे मुंह में पानी आ जाता है।

देश में पैकेज्ड फूड का चलन तेजी से बढ़ रहा है। डिब्बाबंद चीजों का इस्तेमाल खाने में सहूलियत के लिए किया जाता है लेकिन इसमें फाइबर की मात्रा बहुत कम होती है, जिसका सीधा असर हमारी पाचन क्रिया पर पड़ता है और शरीर का मेटाबोलिज्म बिगड़ जाता है। फास्ट फूड से हमारा पेट तो भर जाता है लेकिन प्रोटीन, कार्बोहाईड्रेट और विटामिन जैसे जरूरी पोषक तत्व शरीर को नहीं मिल पाते हैं। फास्ट फूड के सेवन से मोटापा तेजी से बढ़ता है जिसके कारण आपको डायबिटीज और दिल से जुड़ी बीमारी होने का खतरा बना रहता है। फास्टफूड में शुगर की मात्रा अधिक और पोषक तत्व की कमी होने के कारण यह आपको सुस्त बनाता है। आपको दिन भर थकावट महसूस होगी और आप आलस का शिकार हो जाएंगे। कोलेस्ट्रोल बढ़ाने में भी फास्टफूड का बहुत बड़ा हाथ है। ज्यादातर उत्पादों में सेहत के लिए जरूरी विटामिन विशेष रूप से विटामिन बी1 और विटामिन सी व मिनरल्स की कमी होती है। ऐसे खाद्य पदार्थो को तैयार करने की प्रक्रिया कुछ इस तरह होती है कि इनके पौष्टिक तत्व नष्ट हो जाते हैं। प्रिजरवेटिव्स और रंग की मिलावट के कारण आजकल लोगों में कैंसर जैसे घातक बीमारियों का खतरा भी बढ़ गया है। कुल मिलाकर एक असंतुलित दिनचर्या विकसित हुई है।

हमारे भोजन में पौष्टिकता की अहमियत काफी पीछे रह

गई है। अच्छा खाना ही सेहत का खजाना है भले ही स्वाद में मजेदार है फास्टफूड, पर यह पारंपरिक भोजन का विकल्प नहीं हो सकता क्योंकि पारंपरिक भोजन पौष्टिकता से भरपूर होता है। पारंपरिक भारतीय भोजन भारतीय भौगोलिक परिवेश में बहुत फायदेमंद है। घातक बीमारियों और मोटापे से परेशान लोग आजकल अपने खान–पान को लेकर बहुत जागरूक हो रहे हैं. इसमें युवा वर्ग को सावधान रहने की आवश्यकता है जिससे लंबा सुखी स्वस्थ जीवन जी सकें। अनहेल्दी खानपान, कम शारीरिक गतिविधियां और तनावपूर्ण माहौल में स्वस्थ जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। स्वस्थ रहने के लिए आपको पौष्टिक और संतुलित भोजन ही करना चाहिए।

किसी भी क्षेत्र का आहार स्थानीय जलवायु, मौसम, वहां की मिट्टी और पानी आदि के अनुसार निर्धारित होता है। भारत ही नहीं पूरी दुनिया के आहार विशेषज्ञ एक बात पर एकमत होते हैं कि किसी भी शरीर के लिए सबसे बेहतरीन आहार वही होता है जो स्थानीय स्तर पर पारंपरिक रूप से उपलब्ध होता है। उदाहरण के लिए उत्तर भारत में मिलने वाला भोजन उत्तर भारतीयों जबकि दक्षिण भारत में मिलने वाला भोजन दक्षिण भारतीयों के शरीर के हिसाब से उपयुक्त माना जाता है क्योंकि वह वहां की जलवायु के अनुसार होता है और उसमें परिवेश के अनुसार सभी पौष्टिक तत्व होते हैं।

पारंपरिक भारतीय भोजन में मुख्य आहार अनाज, दालें और सब्जियां होती हैं जो शरीर में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, और फाइबर यानी रेशे के साथ–साथ खनिज लवण की आपूर्ति करता है। भारतीय भोजन में इस्तेमाल होने वाले मसालों में शक्तिशाली एंटी ऑक्सीडेंट्स और चिकित्सीय गुण पाए जाते हैं। भोजन के अंत में मीठे के रूप में चीनी से बनी मिठाई की जगह गुड़ की छोटी सी डली खाने की परंपरा है जो कि शरीर में खून की कमी को दूर करती है और लाल रक्त कोशिकाओं में बढ़ोतरी होती है। यही नहीं, ये शरीर के प्रदूषक तत्वों को बाहर निकालने में भी मददगार होती है। कुल मिलाकर देखा जाए तो भारतीय भोजन हमारे शरीर को हर तरह से पोषित करने के हिसाब से बनाए जाते हैं।

अपने मन में सोच कर देखा कि आप जीने के लिए खाते हैं या खाने के लिए जीते हैं। आजकल का युवा वर्ग यही कहता है क्या फर्क पड़ता है, खाना तो दोनों ही स्थिति में चाहिए।' लेकिन पेट भरना और पौष्टिक खाने में अन्तर है। माना कि फास्ट फूड स्वादिष्ट है आसानी से उपलब्ध है लेकिन वह अपने साथ ढेरों बीमारियों को भी लेकर आता है उसमें मौजूद कैमिकल, प्रिजरवेटिव्स और रंग हमारे शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे हैं तो क्यों न हम पारम्परिक भोजन अपना कर स्वस्थ और रोगमुक्त जीवन जीयें।

ज्योति शर्मा

जरा सोचिए

अगर हम अपने पूर्वजों की तरह जीवन में संपूर्ण पोषण वाले भोजन को नियंत्रित मात्रा में लें, तो शायद बहुत सारी परेशानियों से बच जाएंगे।

राजमा, दाल और सोयाबीन,
मिलती है इनसे प्रोटीन।
जब थाली में होंगे ये प्रतिदिन
तभी शरीर की वृद्धि मुमकिन।।

अंडा, घी, दूध, मक्खन, मांस,
इनमें होता है वसा का वास।
भोजन में इनके सेवन से,
मिलती ऊर्जा हमको खास।।
गेहूं चावल, आलू, मक्का
नित्य सेवन करो इनका।

कार्बोहाइडेट के है ये भंडार
मिलती है उर्जा अपार।।
हरी सब्जियां और फल जो खाते,
खनिज लवण और विटामिन पाते।
रोगों से रक्षा है ये करते,
स्वस्थ निरोगी हमें बनाते।।

भारत की कुछ सशक्त महिलाएं

भारतीय स्त्रियों की कामयाबी की अपनी एक अलग गाथा है, महत्व है और उनकी अलग–अलग तरह की सुर्खियां हैं। आज भी अनेक भारतीय महिलाएँ पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर देश की प्रगति में भागीदार बन रही हैं। उनका कार्यक्षेत्र कार्पोरेट सेक्टर हो या खेल, फिल्म हो या राजनीति, साहित्य हो या पत्रकारिता। हजारों भारतीय महिलाओं ने अपने कर्म, व्यवहार और बलिदान से विश्व में अपनी शक्ति का लोहा मनवाया है। भारतीय संस्कृति और समाज में नारियों को महत्वपूर्ण दर्जा दिया गया है। इन भारतीय महिलाओं ने जहां विभिन्न धर्मों को प्रभावित किया वहीं इन्होंने संस्कृति, समाज और सभ्यता को नया मोड़ दिया। भारतीय इतिहास में इन महिलाओं के योगदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। वैसे तो भारत में अनगिनत महिलाएं हैं जिन्होंने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है लेकिन मैं यहां कुछ ऐसी प्रभावशाली महिलाओं का उल्लेख कर रहीं हूं जिनसे मैं सबसे अधिक प्रभावित हुई।

1. **इंदिरा गांधी**

भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का जन्म 19 नवंबर 1917 को इलाहाबाद में आनंद भवन में हुआ था। अपने दृढ़ निश्चय, साहस और निर्णय लेने की अद्भुत क्षमता के कारण इंदिरा गांधी को विश्व राजनीति में 'ऑयरन लेडी' के रूप में जाना जाता है।पिता के निधन के बाद कांग्रेस पार्टी में इंदिरा गांधी में पार्टी एवं देश के नेता की छवि देखने लगे। वे सबसे पहले लालबहादुर शास्त्री मंत्रिमंडल में सूचना एवं प्रसारण मंत्री बनीं। शास्त्रीजी के निधन के बाद 1966 में वे देश के सबसे शक्तिशाली पद 'प्रधानमंत्री' पर आसीन हुईं।, बैंकों का राष्ट्रीयकरण करने जैसा साहसिक फैसला लेने और पृथक बांग्लादेश के गठन और उसके साथ मैत्री और सहयोग संधि करने में सफल होने के बाद बहुत तेजी से भारतीय राजनीति में छा गईं।

1971 के युद्ध में विश्व शक्तियों के सामने न झुकने के नीतिगत और समयानुकूल निर्णय क्षमता से पाकिस्तान को परास्त किया और बांग्लादेश को मुक्ति दिलाकर स्वतंत्र भारत को एक नया गौरवपूर्ण क्षण दिलवाया। वे वर्ष 1966 से 1977 और 1980 से 1984 के बीच प्रधानमंत्री रहीं। ऑपरेशन ब्लू स्टार के बाद वे सिख अलगाववादियों के निशाने पर थीं। 31 अक्टूबर 1984 को उनके दो सिख अंगरक्षकों ने ही उनकी हत्या कर दी।

2. रमाबाई रानडे

रमाबाई रानडे (25 जनवरी 1863 –1924 तक) एक भारतीय समाजसेवी और 19वीं शताब्दी में पहली महिला अधिकार कार्यकर्ताओं में से एक थी। वह 1863 में कुरलेकर परिवार में पैदा हुई थी। 11 वर्ष की आयु में, उन्होंने जस्टिस महादेव गोविंद रानडे से विवाह किया, जो एक प्रतिष्ठित भारतीय विद्वान और समाज सुधारक थे। सामाजिक असमानता के उस युग में, महिलाओं को स्कूल जाने और साक्षर बनने की इजाजत नहीं थी, रमाबाई, उनकी शादी के कुछ ही समय बाद, महादेव गोविंद रानडे के मजबूत समर्थन और प्रोत्साहन के साथ पढ़ना और लिखना सीखने लगी। अपनी मूल भाषा मराठी के साथ शुरू करके, रमाबाई ने अंग्रेजी और बंगाली की मास्टरी करने के लिए कड़ी मेहनत की।

अपने पति से प्रेरित होकर, रमाबाई ने महिलाओं में सार्वजनिक बोलने को विकसित करने के लिए मुंबई में 'हिंदू लेडीज सोशल क्लब' की शुरुआत की। रमाबाई पुणे में 'सेवा सदन सोसाइटी' की संस्थापक और अध्यक्ष थी। रमाबाई ने अपने जीवन को महिलाओं के जीवन में सुधार के लिए समर्पित किया। रमाबाई रानडे ने अपने पति और अन्य सहयोगियों के साथ 1886 में पुणे में लड़कियों का पहला उच्च विद्यालय, प्रसिद्ध हुजूरपागा स्थापित किया।

3. अमृता प्रीतम :

अमृता प्रीतम का जन्म 1919 में पंजाब के गुजरांवाला में हुआ था. उनका बचपन लाहौर में ही गुजरा। उन्होंने अपनी शिक्षा भी वहीं से ली। उनके पिता एक स्कूल टीचर और कवि थे। उनके पिता ने उनका पालन–पोषण किया। यही वजह रही कि अमृता को बचपन से ही लेखन में रुचि रही। उन्होंने अपने बचपन से ही भेदभाव का विरोध किया था. वो अछूत जैसी किसी चीज पर विश्वास नहीं करती थीं। उन्होंने अपने घर में किये जाने वाले भेदभाव का भी हमेशा से विरोध किया। दरअसल, बचपन में उनकी दादी घर में आने वाले मुस्लिमों के लिए अलग बर्तन रखती थीं।

सन 1947 में, देश का बंटवारा हो गया इस बंटवारे का दर्द लाखों लोगों के साथ अमृता ने भी सहा इस दौरान, उन्हें लाहौर छोड़ना पड़ा। अब वह दिल्ली आकर बस गईं उन्होंने देश–विभाजन को बहुत करीब से देखा था। वो पीड़ा और परेशानी उन्होंने खुद झेली थी। यही वजह थी कि वो अक्सर अपने लेखन में बंटवारे का दर्द कुरेदती नजर आईं। दिल्ली आने के बाद, उन्होंने पंजाबी के साथ–साथ हिंदी में भी लिखना शुरू कर दिया। 16 साल की उम्र में उनका विवाह हो गया। उनके पति एक संपादक थे शादी के बाद उनका नाम अमृता कौर से अब अमृता प्रीतम हो गया। लेकिन, उनका वैवाहिक जीवन अच्छा नहीं चल रहा था। उनका पहला संकलन 1936 में प्रकाशित हुआ इस संकलन का नाम था 'अमृत लहरां'। उनके सबसे बेहतरीन रचना मानी जाती है 'पिंजर'

4. बछेंद्री पाल

बछेंद्री पाल का जन्म : 24 मई, 1954 को उत्तरकाशी, उत्तराखंड में हुआ था भारत की बछेंद्री पाल संसार की सबसे ऊंची चोटी 'माउंट एवरेस्ट' पर चढ़ने वाली प्रथम भारतीय महिला है। बछेंद्री पाल संसार के सबसे ऊंचे पर्वत शिखर 'माउंट एवरेस्ट' की ऊंचाई को छूने वाली दुनिया की 5वीं महिला पर्वतारोही हैं इन्होंने यह कारनामा 23 मई, 1984 को किया था।

भारतीय अभियान दल के सदस्य के रूप में माउंट एवरेस्ट पर आरोहण के कुछ ही समय बाद इन्होंने इस शिखर पर चढ़ाई करने वाली महिलाओं की एक टीम के अभियान का सफल नेतृत्व किया। इसी प्रकार वर्ष 1994 में बछेंद्री ने महिलाओं के साथ गंगा नदी में हरिद्वार से कोलकाता तक लगभग 2,500 किमी लंबे नौका अभियान का नेतृत्व किया। हिमालय के गलियारे में भूटान, नेपाल, लेह और सियाचिन ग्लेशियर से होते हुए कराकोरम पर्वत–श्रृंखला पर समाप्त होने वाला लगभग 4,000 किमी लंबा अभियान भी इनके द्वारा इस दुर्गम क्षेत्र में 'प्रथम महिला अभियान' था। केंद्र सरकार ने इन्हें वर्ष 1984 में ही अपने प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान 'पद्मश्री' से सम्मानित किया। उत्तर प्रदेश सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा इन्हें वर्ष 1985 में स्वर्ण पदक से नवाजा गया। भारत सरकार ने इन्हें वर्ष 1986 में अपने प्रतिष्ठित खेल पुरस्कार 'अर्जुन पुरस्कार' से सम्मानित

किया। इन्हें वर्ष 1990 में 'गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' में भी सूचीबद्ध किया गया।

5. मैरी कॉम

मैरी कॉम एक महान भारतीय खिलाड़ी जिन्होंने अपनी महान उपलब्धियों से भारत का नाम दुनिया भर में रोशन किया है।

मैरी कॉम का जन्म 1 मार्च 1983 को कन्गथेइ मणिपुर भारत में हुआ था। मैरी कॉम का पूरा नाम मांगते चुंगनेजंग मैरी कॉम है। मैरीकॉम ने डिंगो को बॉक्सिंग करते हुए देखा और बॉक्सिंग को अपना करियर बनाने की ठान ली। इसके लिए मैरीकॉम के सामने सबसे पहली बड़ी चुनौती थी अपने घर वालों को इसके लिए राजी करना। मैरी कॉम ने अपने मां बाप को बिना बताए बॉक्सिंग के लिए ट्रेनिंग शुरू कर दी। वे अपने गांव के बॉक्सिंग कोच एम नरजीत सिंह से मिली और उन्हें ट्रेनिंग देने के लिए निवेदन किया। वह बॉक्सिंग के लिए बहुत ज्यादा भावुक थी साथ ही वह बहुत ही जल्दी सीखने वाली विद्यार्थी थी मैरी कॉम समस्त भारत के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। इनका जीवन कई उतार–चढ़ाव से भरा हुआ रहा है।

उनका अंतर्राष्ट्रीय करियर प्रथम इ.आई.वी.वुमेन्स वर्ल्ड बॉक्सिंग चैंपियनशिप में भाग लेने से शुरू हुआ। अमेरिका में आयोजित इस प्रतियोगिता (2001) में 48 किलो वजन की श्रेणी में सिल्वर मेडल जीता था। 2002 में टर्की में आयोजित 45 किलो श्रेणी में गोल्ड मेडल जीता। 2003 में भारत में आयोजित एशियाई वुमन बॉक्सिंग में गोल्ड मेडल जीता इसके बाद तो लगातार नोर्वे , ताइवान तथा रूस में गोल्ड मेडल जीतती रही। वीनस वुमेन्स बॉक्स कप डेनमार्क में भी गोल्ड मिला। बच्चों के जन्म के बाद दो साल का अंतराल रहा और 2008 में भारत में एवी बॉक्सिंग चौंपियनशिप में सिल्वर मेडल प्राप्त किया।

मैरी कॉम ने सन 2012 में ओलंपिक में क्वालीफाई किया था और ब्रोंज मेडल हासिल किया था पहली बार कोई भारतीय महिला बॉक्सर यहां तक पहुंची थी। लन्दन में समर ओलम्पिक्स में समापन समारोह में उन्होंने भारतीय तिंरगा फहराया इसके अलावा वह 6 बार वर्ल्ड बॉक्सिंग चौंपियनशिप जीत चुकी है इसके अतिरक्ति अर्जुन अवार्ड, पद्मश्री अवार्ड, राजीव गांधी खेल रत्न अवॉर्ड, अन्य कई महत्वपूर्ण अवॉर्ड और सन 2013 में देश के तीसरे सबसे बड़े सम्मान पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

6. अरूंधती रॉय

अरुन्धती रॉय का जन्म 1961 को केरल में हुआ था। दिल्ली स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर में वास्तुकला की पढ़ाई की । अरुन्धती राय भारत की उन अंग्रेजी–भाषी लेखिकाओं में श्रेष्ठ स्थान रखती हैं, जिन्होंने अपनी लेखकीय शैली के द्वारा बहुत ही कम समय में लोकप्रियता हासिल कर ली। वह बुकर पुरस्कार प्राप्त करने वाली भारत की प्रथम महिला हैं। संघर्ष ही इनका जीवन रहा है। प्रगतिवादी, यथार्थवादी लेखिकाओं में इनका नाम लिया जाता है। ये एक कुशल अभिनेत्री तथा समाज सेवी कार्यों में रुचि लेने वाली संवेदनशील लेखिका हैं। मैंसी साहब में इन्होंने एक संवेदनशील आंखों और हाव–भाव से बात करने वाली आदिवासी की भूमिका अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से निभायी। अरुन्धती रॉय ने अपनी पुस्तक "द गॉड ऑफ स्माल थिंग" में दक्षिण भारत की जाति–पाति के विश्वास, आस्था, विषमताओं के बीच जीवन जीते जुड़वां बच्चों की व्यथा का मार्मिक, मनोवैज्ञानिक व यथार्थ चित्रण किया है।

इस उपन्यास में इन्होंने पारिवारिक कलह, सामाजिक विषमताओं, प्रथाओं के साथ–साथ सम्प्रदायवाद की समस्याओं का इतनी बेबाकी से चित्रण किया है कि इन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की लेखिका बनने का गौरव प्राप्त हो गया। इन्हें इस उपन्यास हेतु ब्रिटेन का सर्वाधिक सम्मानित पुरस्कार "बुकर" मिला। अरुन्धती ने यह उपन्यास साढ़े चार वर्षों में पूरा किया । 395 रुपये के इस उपन्यास पर सुश्री अरुन्धती को 16 लाख अमेरिकी डॉलर रायल्टी के तौर पर मिले ।

अरुन्धती राय ने दो अंग्रेजी फिल्मों की पटकथा लिखने के साथ–साथ उसका निर्माण भी किया है । बांधों के निर्माण के विरोध में इनकी नवीन पुस्तक "द ग्रेटर कॉमन गुड है ।" यह नर्मदा बचाओ आन्दोलन से सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं ।

- डिम्पल वर्मा

चिन्तन के कुछ क्षण

मैं क्यों पुछूँ यह विरह निशा, कितनी बीती क्या शेष रही?

उर का दीपक चिर, स्नेह अतल,
सुधि–लौ शत झंझा में निश्चल,
सुख से भीनी दुख से गीली बर्ती सी सांस अशेष रही।

निश्वासहीन सा जग सोता,
श्रृंगार शून्य अम्बर रोता,
तब मेरी उजली मूक व्यथा, किरणों के खोले केश रही।

विद्युत घन में बुझने आती
ज्वाला सागर में घुल जाती,
मैं अपने आंसू में बुझ धुल, देती आलोक विशेष रही।

जो ज्वारों में पल कर न बहें,
अंगार चुगें जलजात रहें,
मैं गत–आगत के चिर संगी सपनों का कर उन्मेष रही।

उनके स्वर से अन्तर भरने,
उस गति को निज गाथा करने,
उनके पद चिन्ह बसाने को, मैं रचती नित परदेश रही।

गणेश साह, अनुभाग अधिकारी

अन्तर्मन से हुआ प्रणयन

अन्तर्मन से हुआ प्रणयन
अनुरक्ति अवसाद का हुआ शमन।

अधीर अहम् अस्ताचल में गये
आनन्दित हदय के खुले सौ नयन।

कबीर के स्वर सुगन्ध जैसे
तुलसी के अधर मधुबन्ध जैसे ।

रसखान के प्रहर अनुबन्ध जैसे
 सूर के लहर चहुरंग जैसे।

स्वयं की यात्रा निराकार है
अन्तस् से प्रेम साकार है।

अनुराग राग विराग क्षणिक
आलोकित समर्पण ही आधार है।

महेन्द्र प्रताप सिंह

हिन्दी मातृभाषा

हिन्दी हमारी मातृभाषा है,
यह व्यवहार की भाषा है।
आओ हिन्दी का सम्मान करें,
देश का मान करें।
देश दुनिया तक हिन्दी पहुचाओ,
पूरी दुनिया में पहचान बनाओ।
हिन्दी से हिन्दुस्तान है,
देश की यह शान है।
जो नहीं करते राजभाषा का सम्मान,
हमेशा होता है उनका अपमान।
हिन्दी भाषा है हमारी पहचान,
विश्व में हमारी है विशेष पहचान।

विकास किशोर सक्सेना, निजि सचिव

हिंदी

हिंदी जन जन की भाषा है,
हिंदी भारत की आशा है हिंदी।
जिसने पूरे देश को जोड़े रखा,
वह मजबूत धागा है हिंदी ।
जिसने काल को जीत लिया है,
ऐसी कालजई भाषा है हिंदी ।
सरल शब्दों में कहा जाए तो,
जीवन की परिभाषा है हिंदी ।

अशोक बजाज (सलाहकार)

क्यों हो गये हम जुदा की आज जोड़ने की बात होती है

यहां मन्दिर में दाना चुग कर चिड़िया, मस्जिद में पानी पीती है।

यहां बुद्ध के उपदेश और ईशा मसीह की गाथा होती है।

मैंने सुना है यहां राधा रानी की चुनरी, कोई सलमा बेगम सिलती है।

फिर क्यों हो गये हम जुदा, कि आज जोड़ने की बात होती है।

यहां असम की चाय हो या दक्षिण के मसाले, विदेशियों को आकर्षित करती है।

वैष्णों देवी में चढ़ाये गये नारियल की आपूर्ति, केरल और तमिल जैसे राज्यों से होती है।

फिर क्यों हो गये हम जुदा की आज जोड़ने की बात होती है।

यहां बॉडर पर शहीद हुए सभी जवानों को हिन्दुस्तान के तिरंगे में लपेटा जाता है।

यहां राष्ट्रपति भी एक वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे बनते है।

मैनें सुना है यहां ईद और दीवाली पर एक दूसरे को मिठाई और सिवाईयां खिलाई जाती हैं।

यहां मुमताज जैसी कलाकार और लता मंगेशकर जैसी सुरों की संगम होती है।

फिर क्यों हो गये हम जुदा की आज जोड़ने की बात होती है।

राजेन्द्र सिंह एम.टी.एस

"पिता जी के लिए उनके श्राद्ध पर कविता"

आप पिता थे मेरे, मेरे जीवन
में लगभग अनियंत्रित बहुत से
व्यक्तिगत आक्रोश थे मेरे,

कुछ हास्यास्पद शिकायतें भी थी, जो
कभी सुनाई नहीं आपको,

बचपन से आपकी एक छवि थी, डर
हमेशा आगे रहता, आप हमेशा पीछे।

एक वक्त आपको देख, शब्द अटक
जाते थे मेरे,

भूल जाता था मैं चप्पल पहनना
भी, शर्ट पहन लेता था पायजामें के
ऊपर।

थोड़ा बड़ा हुआ तो मैंने तर्कों से कई
बार किया आपको खारिज

और विजयी मुद्रा में घूमता रहा
ऑगन में,

असल में वही मेरी असल पराजय
थी, जो पराजय का श्राप बनकर
चिपक गई,

मेरे अस्तित्व से,एक वक्त वो भी
देखा, जब थे आप बेहद मजबूर,

दिला रहे थे मुझे आश्वस्ति, परहेज
करने के भर रहे थे शपथ पत्र,

आपको लगा मैं डाक्टर को ठीक
ठाक बता सकता हूँ, आपकी दशा
और बचा लूँगा आपको

उस वक्त मौत के मुँह से, मैं आपका
बेटा था,

मगर उस वक्त आप मुझे अपने पिता
की तरह देख रहे थे,

आप गलत थे उस वक्त मैं हमेशा से
मजबूर था आपके सामने,

बात जीवन की हो या मौत की, रहा
हमेशा उतनी ही मात्रा में मजबूर

आपको बचाने के मामले में, मैं
मतलबी हो गया था,

नहीं मानी आपकी अंतिम इच्छा, जब
आपने कहा मुझे अपनी मॉ के पास
ले चलो,

वास्तव में मुझे नहीं पता था कि ये
आपके आखिरी शब्द होंगे,

हो सके तो मेरी अवज्ञा के लिए मुझे
माफ करना पिता जी,

मैंने विज्ञान को मान लिया था ईश्वर
और इस झूठे आत्म विश्वास में था

कि अस्पताल से ले जाऊंगा आपको
ठीक कराकर,

नहीं पता था कि कलयुग में नहीं
होता कोई ईश्वर

बस एक सच्चाई होती है मौत जो
नहीं छोड़ती किसी पिता या पुत्र को,

आपकी मौत से पहले मुझे मांगनी थी
कुछ अश्रुपूरित क्षमा याचनायें,

मुझे पता था आप माफ कर दोगे
तुरन्त, मगर आप चालाकी से निकल
गये चुपचाप,

अब ये क्षमाएं मेरे कंधे पर सवार
रहती हैं हमेशा, ऑसू भी नहीं देते हैं
इनका साथ,

सच ये है आप बिन बड़ा अकेला पड़
गया हूँ मैं,

इतना अकेला कि जितने अकेले हो
आप अपनी दुनिया में,

और दो अकेले पिता पुत्र, कभी नहीं
मिला करते, न इस लोक में व न
उस लोक में

मेहरबान सिंह चौहान
लेखा अधिकारी

संकलित कविताएं

''हर दोस्त कोहिनूर होता है''

पानी से तस्वीर कहॉ बनती है, ख्वाबों से तकदीर कहॉ बनती है।
किसी भी रिश्ते को सच्चे दिल से निभाओं, ये जिन्दगी वापस कहॉ मिलती है।।
कौन किस से चाहकर दूर होता है, हर कोई अपने हालातों से मजबूर होता है।
हम तो बस इतना जानते है, कि हर रिश्ता मोती एवं हर दोस्त कोहिनूर होता है।।

राजीव राणा,(प्रबंधक)

स्वच्छ भारत अभियान

गली–गली में चर्चा है स्वच्छ भारत अभियान की।
आओ हमसब मिलकर समझे महता कचरे दान की।
बिना प्रबन्धन के बीमारी फैले जो दुश्मन है जान की।
उचित प्रबन्धन खाद बनाना करना मदद किसान की।
कपड़े का थैला है विकल्प पॉलीथीन की थैली की
आओ हमसब मिलकर समझे महत्ता स्वच्छ भारत अभियान की।।
हमसब के कन्धों पर है सफल करने इस अभियान की।
गली–गली में चर्चा है स्वच्छ भारत अभियान की।

पी.के.राणा(सलाहकार)

रिटर्न टिकट "तो कंफर्म है"

रिटर्न टिकट "तो कंफर्म है"
इसलिए मन भर कर जीएं,
मन में भर कर ना जीएं ।
छोड़िए शिकायत, शुक्रिया अदा कीजिए,
जितना है पास, पहले उसका मजा लीजिए ।
चाहे जिधर से गुजरिए,
मीठी सी हलचल मचा दीजिए ।
उम्र का हर एक दौर मजेदार है
अपनी उम्र का मजा लीजिए ।
क्योंकि सभी को पता है यारों
रिटर्न टिकट "तो कंफर्म है"

कुलदीप सिंह कार्की (सलाहकार)

ससुराल कितना भी प्यारा हो

ससुराल कितना भी प्यारा हो
मायका फिर भी याद आता है
रास्ता कितना भी कठिन हो
मन उधर ही जाना चाहता है
ना जाने क्या आकर्षण होता है
मायके की गलियों में जाते ही
सब थकन मिट जाती है
गुजरा जमाना याद आता है
वो बचपन याद आता है
मेरा स्कूल ,मेरा पार्क
मेरा कमरा मेरी ड्रेस
और भी ना जाने कितनी यादें
बिखरी होती हैं हर जगह
सच में बहुत याद आता है

वन्दना वर्मा, (निजि सचिव)

बेटी

पूजे कई देवता मैंने तब तुमको था पाया
क्यों कहते हो बेटी को धन है पराया।
यह तो है मॉ की ममता की छाया
जो नारी के मन आत्मा व शरीर में है समाया।।
मैं पूछती हूॅ उन हत्यारे लोगों से।
क्यों तुम्हारे मन में यह जहर है समाया।
बेटी तो है मॉ का ही साया।
क्यों अब तक कोई समझ नहीं पाया।
क्या नहीं सुनाई देती तुम्हें उस अजन्मी बेटी की आवाज।
जो कराह रही तुम्हारे अंदर बार–बार, मत छीनो उसके जीने का अधिकार।
आने दो उसको भी जग में लेने दो आकार।।

अनुभा जैन, सलाहकार

''स्त्री''

सरल भाषा में कहूं, स्त्री यानी ''अगरबत्ती''
जिसमें आग भी है, धीरज भी है,
सहनशीलता भी है, अपने आप को धीरे–धीरे
जलाकर अपने परिवार को सुगंधित करने की ताकत भी है।

वन्दना वर्मा, (निजि सचिव)

''प्यारी बेटी''

एक मीठी सी मुस्कान है बेटी, खानदान की पहचान है बेटी
खुशियों की हर खान है बेटी, एक इठलाती शान है बेटी
अपने पापा की शान है बेटी, हर घर की मुस्कान है बेटी
हर घर की जान है बेटी जिस घर जाए है बेटी
उस घर की लाज है बेटी हर घर की ईमान है बेटी
एक मीठी सी मुस्कान है बेटी, एक मीठी सी मुस्कान है बेटी।।

मनीश वर्मा, निजि सहायक

जो समझ गया वो तर गया

एक राजा था जिसे राज भोगते काफी समय हो गया था बाल भी सफेद होने लगे थे। एक दिन उसने अपने दरबार में उत्सव रखा और अपने गुरु तथा मित्र देश के राजाओं को भी सादर आमंत्रित किया। उत्सव को रोचक बनाने के लिए राज्य की सुप्रसिद्ध नर्तकी को भी बुलावा भेजा। राजा ने कुछ स्वर्ण मुद्राएं अपने गुरु को दी ताकि नर्तकी के अच्छे गीत नृत्य पर वे उसे पुरस्कृत कर सके। सारी रात नृत्य चलता रहा। सुबह होने वाली थी, नर्तकी ने देखा की मेरा तबले वाला ऊँघ रहा है उसको जगाने के लिये नर्तकी ने एक दोहा पढ़ा–

''बहुत बीती, थोड़ी रही, पल पल गयी बिहाई।
एक पलक के कारने, ना कलंक लग जाए।''

अब इस दोहे का अलग–अलग व्यक्तियों ने अलग–अलग अपने–अपने अनुरूप अर्थ निकाला। तबले वाला सतर्क हो बजाने लगा। जब ये बात गुरु ने सुनी, गुरु ने सारी मोहरें उस मुजरा करने वाली को दे दीं। वही दोहा उसने फिर पढ़ा तो राजा की लड़की ने अपना नौलखा हार दे दिया। उसने फिर वही दोहा दोहराया तो राजा के लड़के ने अपना मुकुट उतारकर दे दिया। वही दोहा दोहराने लगी राजा ने कहा बस कर एक दोहे से तुमने वेश्या होकर सबको लूट लिया है।

जब ये बात राजा के गुरु ने सुनी गुरु के नेत्रों में आंसू आ गये और कहने लगा, ''राजा इसको तूं वेश्या न कह, ये अब मेरी गुरू है। इसने मेरी आँखें खोल दी है कि मैं सारी उम्र जंगलों में भक्ति करता रहा और आखिरी समय में मुजरा देख कर अपनी साधना नष्ट करने आ गया हूँ, भाई मैं तो चला!

राजा की लड़की ने कहा, '' आप मेरी शादी नहीं कर रहे थे, आज मैंने आपके महावत के साथ भागकर अपना जीवन बर्बाद कर लेना था। इसने मुझे सुमति दी है कि कभी तो तेरी शादी होगी। क्यों अपने पिता को कलंकित करती है? ''

राजा के लड़के ने कहा, '' आप मुझे राज नहीं दे रहे थे। मैंने आपके सिपाहियों से मिलकर आपका कत्ल करवा देना

था। इसने समझाया है कि आखिर राज तो तुम्हें ही मिलना है। क्यों अपने पिता के खून का कलंक अपने सर लेते हो?

जब ये बातें राजा ने सुनी तो राजा को भी आत्मज्ञान हुआ क्यों न मैं अभी राजकुमार का राजतिलक कर दूँ, गुरु भी मौजूद है। उसी समय राजतिलक कर दिया और लड़की से कहा बेटी, '' मैं जल्दी ही योग्य वर देख कर तुम्हारा भी विवाह कर दूँगा। ''

यह सब देख कर मुजरा करने आयी नर्तकी ने कहा की, मेरे एक दोहे से इतने लोग सुधर गए, मैं तो ना सुधरी। आज से मैं अपना पेशा बंद करती हूँ। हे प्रभु! आज से मैं भी तेरा नाम सुमिरन करूँगी ।

प्रेरणा – समझ आने की बात है, दुनिया बदलते देर नहीं लगती। एक दोहे की दो लाइनों से भी हृदय परिवर्तन हो सकता है, केवल थोड़ा धैर्य रख कर चिंतन करने की आवश्यकता है। ''प्रशंसा'' से ''पिघलना'' मत, ''आलोचना'' से ''उबलना'' मत, निस्वार्थ भाव से कर्म करते रहो।

दिल की चाबी

किसी गाँव में एक ताले वाले की दुकान थी। ताले वाला रोजाना अनेकों चाबियाँ बनाया करता था। ताले वाले की दुकान में एक हथौड़ा भी था। वो हथौड़ा रोज देखा करता था कि ये चाबी इतने मजबूत ताले को भी कितनी आसानी से खोल देती है।

एक दिन हथौड़े ने चाबी से पूछा कि मैं तुमसे ज्यादा शक्तिशाली हूँ, मेरे अंदर लोहा भी तुमसे ज्यादा है और आकार में भी तुमसे बड़ा हूँ

लेकिन फिर भी मुझे ताला तोड़ने में बहुत समय लगता है और तुम इतनी छोटी हो फिर भी इतनी आसानी से मजबूत ताला कैसे खोल देती हो।

चाबी ने मुस्कुरा के ताले से कहा कि तुम ताले पर ऊपर से प्रहार करते हो और उसे तोड़ने की कोशिश करते हो लेकिन मैं ताले के अंदर तक जाती हूँ, उसके अंतर्मन को छूती हूँ और घूमकर ताले से निवेदन करती हूँ और ताला खुल जाया करता है। हथौड़े के प्रहार से ताला खुलता नहीं बल्कि टूट जाता है ठीक वैसे ही अगर शक्ति के बल पर कुछ काम करना चाहते हैं तो 100% नाकामयाब रहेंगे क्योंकि शक्ति से आप किसी के दिल को नहीं छू सकते।

वाह! कितनी गूढ़ बात कही है चाबी ने कि मैं ताले के अंतर्मन को छूती हूँ और वो खुल जाया करता है।

प्रेरणा – आप कितने भी शक्तिशाली हो या कितनी भी आपके पास ताकत हो, लेकिन जब तक आप लोगों के दिल में नहीं उतरेंगे, उनके अंतर्मन को नहीं छूयेंगे तब तक कोई आपकी इज्जत नहीं करेगा। इसलिए चाबी बन जाओ, सबके दिल की चाबी।

दुःख के समय, खुद को बड़ा कर लो

एक बार एक नवयुवक किसी संत के पास पहुंचा और बोला ."मैं अपनी जिन्दगी से बहुत परेशान हूँ, कृपया इस परेशानी से निकलने का उपाय बताएं !", युवक बोला ।

संत बोले, " पानी के ग्लास में एक मुट्ठी नमक डालो और उसे पीयो।"

युवक ने ऐसा ही किया .

"इसका स्वाद कैसा लगा ?", संत ने पुछा। "बहुत ही खराब....एकदम खारा ."– युवक थूकते हुए बोला।

संत मुस्कुराते हुए बोले, "एक बार फिर अपने हाथ में एक मुट्ठी नमक लेलो और मेरे पीछे–पीछे आओ ।"

दोनों धीरे –धीरे आगे बढ़ने लगे और थोड़ी दूर जाकर स्वच्छ पानी से बनी एक झील के सामने रुक गए ।

" चलो , अब इस नमक को पानी में डाल दो ." , संत ने निर्देश दिया।

युवक ने ऐसा ही किया ." अब इस झील का पानी पियो ." , संत बोले।

युवक पानी पीने लगा ....

एक बार फिर संत ने पूछा,: "बताओ इसका स्वाद कैसा है, क्या अभी भी तुम्हें ये खारा लग रहा है ?"

"नहीं, ये तो मीठा है, बहुत अच्छा है", युवक बोला ।

संत युवक के बगल में बैठ गए और बोले, "जीवन के दुःख बिलकुल नमक की तरह हैं ये न इससे कम ना ज्यादा . जीवन में दुःख की मात्रा वही रहती है, बिलकुल वही . लेकिन हम कितने दुःख का भार मन पर लेते हैं ये इस पर निर्भर करता है। इसलिए जब तुम दुखी हो तो सिर्फ इतना कर सकते हो कि खुद का हृदय को तालाब जैसा बड़ा कर लो .... फिर दुःख का एहसास कम होगा। और वह समय आसानी से निकल जाएगा।

ईमानदारी

मुरारी लाल अपने गाँव के सबसे बड़े चोरों में से एक था। मुरारी रोजाना जेब में चाकू डालकर रात को लोगों के घर में चोरी करने जाता। पेशे से चोर था लेकिन हर इंसान चाहता है कि उसका बेटा अच्छे स्कूल में पढ़ाई करे तो यही सोचकर बेटे का एडमिशन एक अच्छे पब्लिक स्कूल में करा दिया था।

मुरारी का बेटा पढ़ाई में बहुत होशियार था लेकिन पैसे के अभाव में 12वीं कक्षा के बाद नहीं पढ़ पाया। अब कई जगह नौकरी के लिए भी अप्लाई किया लेकिन कोई उसे नौकरी पर नहीं रखता था।

एक तो चोर का बेटा ऊपर से केवल 12वीं पास तो कोई नौकरी पर नहीं रखता था। अब बेचारा बेरोजगार की तरह ही दिन रात घर पर ही पड़ा रहता। मुरारी को बेटे की चिंता हुई तो सोचा कि क्यों ना इसे भी अपना काम ही सिखाया जाये। जैसे मैंने चोरी करके अपना गुजारा किया वैसे ये भी कर लेगा।

यही सोचकर मुरारी एक दिन बेटे को अपने साथ लेकर गया। रात का समय था दोनों चुपके चुपके एक इमारत में पहुंचे। इमारत में कई कमरे थे सभी कमरों में रोशनी थी देखकर लग रहा था कि किसी अमीर इंसान की हवेली है।

मुरारी अपने बेटे से बोला आज हम इस हवेली में चोरी करेंगे, मैंने यहाँ पहले भी कई बार चोरी की है और खूब माल भी मिलता है। यहाँ लेकिन बेटा लगातार हवेली के आगे लगी लाइट को ही देखे जा रहा था।

मुरारी बोला अब देर ना करो जल्दी अंदर चलो नहीं तो कोई देख लेगा। लेकिन बेटा अभी भी हवेली की रोशनी को निहार रहा था और वो करुण स्वर में बोला पिताजी मैं चोरी नहीं कर सकता।

मुरारी तेरा दिमाग खराब है जल्दी अंदर चल

बेटा पिताजी, जिसके यहाँ से हमने कई बार चोरी की है देखिये आज भी उसकी हवेली में रोशनी है और हमारे घर में आज भी अंधकार है। मेहनत और ईमानदारी की कमाई से उनका घर आज भी रोशन है और हमारे घर में पहले भी अंधकार था और आज भी।

मैं भी ईमानदारी और मेहनत से कमाई करूँगा और उस कमाई के दीपक से मेरे घर में भी रोशनी होगी। मुझे ये जीवन में अंधकार भर देने वाला काम नहीं करना। मुरारी की आँखों से आंसू निकल रहे थे। उसके बेटे की पढ़ाई आज सार्थक होती दिख रही थी।

प्रेरणा – बेईमानी से इंसान क्षण भर तो सुखी रह सकता है लेकिन उसके जीवन में हमेशा के लिए पाप और अंधकार भर जाता है। बेईमानी की कमाई से बने पकवान भी ईमानदारी की सूखी रोटी के आगे फीके हैं। कुछ ऐसा काम करें कि आप समाज में सर उठा के चल सकें। हमेशा अपने काम को मेहनत और ईमानदारी से करें।

ईश्वर से प्रेम

एक बुजुर्ग एक ट्रेन के स्लीपर क्लास में यात्रा कर रहा था। वह एक तीर्थयात्रा पर निकला था। सुबह के वक्त एक युवक ने अपने दूसरे सह–यात्रियों से पूछा कि क्या किसी का पर्स खोया है। बुजुर्ग ने कहा कि उसका पर्स खोया है।

युवक ने पूछाः पर्स के अंदर क्या है?

बुजुर्ग ने कहा कि उसके पर्स में बाल कृष्ण की फोटो है।

युवक से अपना पर्स वापस लेते समय बुजुर्ग ने कहा इस पर्स की भी एक कहानी है। सह–यात्रियों को आश्चर्य हुआ कि पर्स की क्या कहानी हो सकती है। उन्होंने बुजुर्ग को पर्स की कहानी बताने के लिए कहा।

बुजुर्ग ने कहानी बतायी कि जब मैं सातवीं कक्षा में था तो मेरे पिता ने मेरे जन्मदिन पर मुझे इस पर्स को उपहार में दिया था। मैंने उस समय अपने प्रिय माता–पिता की तस्वीर इसमें लगाई।

जब मैं कॉलेज में था, तब मैंने अपने माता–पिता की तस्वीर निकाल दी और इसमें अपनी तस्वीर लगा ली क्योंकि मैं अपने को युवा और सुंदर समझता था।

शादी के बाद मैं अपनी पत्नी से ज्यादा प्यार करता था इसलिए मैंने अपनी तस्वीर हटाकर पत्नी की तस्वीर लगा ली।

इसके बाद हमारा बेटा हुआ तो मैंने पत्नी की तस्वीर को हटा कर प्रिय बेटे की तस्वीर लगा ली।

अब पांच साल पहले मेरी पत्नी का देहांत हो गया और मेरा एकमात्र पुत्र अपनी पत्नी और बेटा–बेटी के साथ दिल्ली में रहता है। वह नौकरी में इतना व्यस्त है कि उसके पास मुझसे बात करने का समय नहीं है। नाती–नातिन अपने कंप्यूटर गेम, टीवी शो, गृह–कार्य, स्कूली शिक्षा, दोस्तों आदि में व्यस्त हैं। वे शायद ही कभी मेरे पास आते हैं। एक बार, जब मैं बच्चों से बात कर रहा था तो बहू ने मुझे डांटा कि मैं बच्चों को अपने समय की गुजरी हुई बातें बताकर उनका समय खराब न करूँ।

अब दुनिया में मैं अकेला रह गया था, असहाय और हतोत्साह। परिवार में कोई भी मुझसे बात करने के लिए नहीं था। आखिरकार मुझे भगवान कृष्ण को बच्चे के रूप में प्यार करना शुरू कर दिया और मैं उनकी तस्वीर इस पर्स में रखता हूँ। वह जीवन में मेरा सर्वश्रेष्ठ साथी साबित हुआ है। यद्यपि वह हमेशा से मेरे साथ थे, पर मैंने कभी उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया। अब मैं अकेला नहीं हूँ, वह मुझे इतना व्यस्त रखते हैं कि मुझे किसी और के बारे में सोचने की जरूरत ही नहीं पड़ती। वह वास्तव में मेरे दिल की धड़कन है। मैं उन्हें कैसे भूल सकता हूं?

प्रेरणा – यह घटना आज के युग में ज्यादातर व्यक्तियों के साथ घटती है। हम अंदर छिपे उस ईश्वर के रूप को कभी नहीं देख पाते जो हमारा वास्तविक साथी है। जब सारी दुनिया साथ छोड़ दे उस समय भी वो हमारे साथ रहता है परन्तु हम उसे नजरअंदाज कर देते हैं। इसलिए उस ईश्वर से प्रेम करें जो आपके भीतर है, जो सदा आपका है, सदा आपके साथ है

तेल उद्योग विकास बोर्ड में राजभाषा संबंधी गतिविधियां अन्य गतिविधियां

अपने मूल उद्देश्य के साथ–साथ तेल उद्योग विकास बोर्ड, संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के प्रति पूरी तरह सचेत और सजग है। संस्थान में कार्यालयी कामकाज में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाता है। राजभाषा नीति के अर्न्तगत धारा 3(3) का अनुपालन, राजभाषा नियम 1976 के नियम 11 एवं नियम 5 का अनुपालन के साथ–साथ राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी दिशार्निदेशों का अनुपालन करना भी शामिल है। कार्यालय की वेबसाइट हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में है। प्रत्येक तिमाही में सचिव महोदय की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया जाता है इन बैठकों में राजभाषा कार्य की समीक्षा एवं प्रगामी प्रयोग संबंधी निर्णय लिए जाते है। कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का नियमित रूप से आयोजन किया जाता है इन कार्यशालों में सभी अधिकारियों कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरित एवं प्रशिक्षित किया जाता है ।

राजभाषा गतिविधियों की एक झलक आपके सम्मुख प्रस्तुत है:

वार्षिक पत्रिका अनुभूति का प्रकाशन –

हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए बोर्ड के कार्मिकों को हिन्दी में लेख, कविताएं, कहानियाँ, लिखने के लिए प्रेरित किया जाता है और उनकी अभिव्यक्ति को साकार राजभाषा पत्रिका अनुभूति के माध्यम से किया जाता है। इस पत्रिका का प्रकाशन बोर्ड लगातार 15 वर्षों से कर रहा है। इस वर्ष विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन के दौरान गणमान्य कवियों एवं सचिव, ओआईडीबी के कर कमलों से पत्रिका के 15वें अंक का विमोचन किया गया

विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन –

विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर दिनांक 10 जनवरी 2019 एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया । जिसमें हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री चिराग जैन, श्री शम्भू शिखर एवं श्री वेद प्रताप वेद को आमंत्रित किया गया। कविता श्रोताओं का ज्ञानवर्द्धन करने के साथ साथ मनोरंजन का भी कार्य करती है। राजभाषा हिंदी के प्रति जागरुकता पैदा करने के लिए इस कवि सम्मेलन में ओआईडीबी भवन में स्थित सभी कार्यालय के कार्मिकों को आमंत्रित किया गया।

हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए उत्साहपूर्वक वातावरण बनाने और भाषाई सद्भाव को सुदृढ़ बनाने के लिए तेल उद्योग विकास बोर्ड में हिन्दी पखवाड़ा मनाया जाता है। इस वर्ष दिनांक 12 सितम्बर से 26 सितम्बर तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। दिनांक 12 सितम्बर 2019 को हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ माननीय गृह मंत्री जी का हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में संदेश को पढ़कर किया गया। तत्पश्चात कार्यालय में हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

कवि सम्मेलनः– कवि सम्मेलन एक ऐसा कार्यक्रम है जहां विभिन्न धारा के कवि मंच पर अपनी कविता का पाठ करते हैं। दिनांक 13 सितम्बर 2019 को कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। हिंदी साहित्य जगत के प्रतिष्ठित कवियों को इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया।

कवि सम्मेलन में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा यश भारती पुरस्कार से सम्मानित डॉ विष्णु सक्सेना, श्री शम्भु शिखर , डॉ कीर्ति काले, श्री पार्थ नवीन, मास्टर महेन्द्र आमंत्रित कवि अलग–अलग विचारधारा से थे। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से हमें रोमान्चित और भाव–विभोर कर दिया। कवियों ने प्रधानमंत्री जी द्वारा चलाई जा रही योजना बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, उड़ी में हुए आंतकवादी हमले, सैनिकों की शौर्य गाथा एवं यूपी में चुनाव जैसे ज्वलंत विषयों पर अपनी कविताओं से श्रोताओं का मन मोह लिया। कवियों ने तेउविबो की हिंदी के प्रति रुझान की प्रशंसा करते हुए माननीय राष्ट्रपति के कर कमलों से प्राप्त राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त करने पर तेउविबो के अधिकारियों/कर्मचारियों को बधाई दी। डॉ० विष्णु सक्सेना जी की कविताओं में श्रृंगार रस एवं हास्य व्यंग्य व सामयिक समस्याओं के साथ स्थायी मूल्यवत्ता थी। जिसकी सभी ने काफी प्रशंसा और सराहना की। हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए हमें हर स्तर पर विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को करना है जिसका एक चरण बोर्ड द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन भी था। कवि सम्मेलन में उपस्थित जनसमूह ने कवि सम्मेलन का भरपूर आनन्द लिया, यह कवि सम्मेलन हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए आयोजित किया गया।

हिन्दी पखवाड़े के समापन पर प्रतियोगिताओं में विजेताओं को वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी द्वारा प्रमाण–पत्र दिए गए।

वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी ने कहा कि हिंदी पखवाड़े में सभी कार्मिकों ने हिंदी में काम किया है वह सराहनीय है। उन्होंने सभी अधिकारियों कर्मचारियों से अनुरोध किया कि पखवाड़े के बाद भी हिन्दी में काम करें।

हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन

अधिकारियों/कर्मचारियों में हिन्दी में कार्य के प्रति जागरूकता एवं रुचि उत्पन्न करने और उनकी कठिनाइयों को दूर करने के उद्देश्य से प्रत्येक तिमाही में विविध विषयों पर हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष निम्न कार्यशालाएं/व्याख्यान आयोजित किए गए।

''कार्यालय और योग'' विषय पर अमृतम योग फाउंडेशन द्वारा व्याख्यान

''भारतीय भाषण प्रणाली में स्पीच और भाषा प्रौद्योगिकी परियोजना की जानकारी'' विषय पर सी–डैक,नोएडा द्वारा कार्यशाला का आयोजन

''इन्टरनेट और हिन्दी'' विषय पर डॉ. विक्रम सिह, प्राध्यापक, हिन्दी शिक्षण योजना द्वारा व्याख्यान

''हिन्दी और सूचना प्रौद्योगिकी और इन्सक्रिप्ट की बोर्ड पर हिन्दी में टाइपिंग कैसे करें'' विषय पर सी–डैक,नोएडा द्वारा कार्यशाला का आयोजन

'राजभाषा नीति और उसका अनुपालन ' विषय पर संघ लोक सेवा आयोग की पूर्व निदेशक, श्रीमती वीना चतुर्वेदी द्वारा व्याख्यान

अन्य गतिविधियां

तेल उद्योग विकास बोर्ड, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण का एक स्वायत निकाय है। संस्थान अपने लक्ष्य एवं उद्देश्य की पूर्ति के साथ–साथ राष्ट्रीय कार्यक्रमों को एक अनुष्ठान के रूप में आयोजित करता है। इसी श्रृंखला में आयोजित कार्यक्रमों की एक झलक प्रस्तुत है:

44वां स्थापना दिवस समारोह

तेल उद्योग विकास बोर्ड में 10 जनवरी 2019 को अपना 44वां स्थापना दिवस (10 जनवरी) समारोह मनाया गया। इस समारोह में तेउविबो के सभी अधिकारी, कर्मचारी और नोएडा में स्थित अनुदानी संस्थाओं के कार्मिक तेउविबो भवन, में उपस्थित थे। स्थापना दिवस के अवसर पर एक कवि सम्मेलन का भी आयोजन तेउविबो भवन, नोएडा के सभागार में किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह

तेल उद्योग विकास बोर्ड में 21 जून 2019 को ''अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस'' का आयोजन, तेउविबो, भवन, नोएडा में किया गया। तेउविबो भवन नोएडा में स्थित अनुदानी संस्थाओं के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने ''अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस'' में भाग लिया।

स्वच्छता पखवाड़ाः 1 जुलाई से 15 जुलाई 2019

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा आरंभ किया गया राष्ट्रीय स्तर का अभियान है जिसका उद्देश्य गलियों, सड़कों तथा आस–पास की संरचना को साफ–सुथरा करना और कूड़ा साफ करना है। यह अभियान 02 अक्टूबर, 2014 को आरंभ किया गया। स्वच्छता अभियान के सक्रिय भागीदारी के जरिए तेल उद्योग विकास बोर्ड सामाजिक काम भी करता है बोर्ड ने देश को साफ करने में अपना योगदान देने के लिए 1 जुलाई से 15 जुलाई 2019 तक स्वच्छता पखवाड़ा आयोजित किया।

राष्ट्रीय एकता दिवस

भारत के राजनीतिक एकीकरण के लिए सरदार वल्लभ भाई पटेल के योगदान को चिरस्थाई बनाए रखने के लिए उनके जनमतिथि 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जाता है। सभी सरकारी कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और अन्य सरकारी संस्थानों में राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया जाता है। तेल उद्योग विकास बोर्ड के सभी कार्मिकों ने इस दिन देश की एकता, अखंडता और सुरक्षा के लिए शपथ ली।

संविधान दिवस

संविधान दिवस (26 नवम्बर) भारत गणराज्य का संविधान 26 नवम्बर 1949 को बनकर तैयार हुआ था। संविधान सभा के प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ० भीमराव अम्बेडकर के 125वें जयंती वर्ष के रूप में 26 नवम्बर 2015 से संविधान दिवस मनाया गया। 26 नवंबर का दिन संविधान के महत्व का प्रसार करने और डॉ० भीमराव अम्बेडकर के विचारों और अवधारणाओं का प्रसार करने के लिए चुना गया था।

संविधान सभा ने भारत के संविधान को 2 वर्ष 11 माह 18 दिन में 26 नवम्बर 1949 को पूरा कर राष्ट्र को समर्पित किया। गणतंत्र भारत में 26 जनवरी 1950 से संविधान अमल में लाया गया। तेल उद्योग विकास बोर्ड में 26 नवम्बर को संविधान दिवस के रूप में मनाया गया और कार्मिकों को "भारत के संविधान के प्रस्तावना" की जानकारी दी गई।

जरा सा हंस लें

शिक्षक बच्चों से–भूगोल का पाठ पढ़ाते हुए बच्चों को समझाया कि –सभी ग्रह अपनी कक्षा में घूमते हैं।
विद्यार्थी– सर आपने आपके कहे अनुसार सभी ग्रह अपनी कक्षा में घूमते हैं तो फिर वह पढ़ते कब है।

शिक्षक बच्चों से – देश की तीन बड़ी खानों के नाम बताओ और वह कहां पर हैं?
विद्यार्थी– जी, आमिर खान, सलमान खान, शाहरुख खान और वह मुम्बई में हैं।

पिताजी डांटते हुए–राजू तुम्हें फूल तोड़ लाने को कहा था और तुम पूरी डाली तोड़ लाए, जल्दी बोलो कि क्यों?
राजू– पिताजी, वहां लिखा था कि फूल तोड़ना मना है इसलिए मैं डाली सहित तोड़ लाया।

महिला : तुमने मेरे बेटे की पिटाई क्यों की ?
मोटी महिला : उसने मुझे मोटी भैंस कहा था।
महिला : तो बहन, तुम्हें बेटे को पीटने के बजाय अपनी खुराक में कमी करनी चाहिए।

एक लड़के ने नई–नई साइकिल चलानी सीखी थी। वह साइकिल चलाते हुए पैडल से पैर उठाकर बोला : रवि, देख मेरे हाथ नहीं है। इतना कहते ही वह साइकिल से गिर गया।
रवि उसके पास आकर बोला : राजू देख, अब तेरे दांत भी नहीं हैं।

माँ बेटे से : बेटे, घर में कायदे से रहना चाहिए। तुम्हें मेरी हर बात माननी चाहिए।
बेटे ने सिर हिलाते हुए कहा : मैं समझ गया मम्मी, जैसे पापा रहते हैं।

चंकी (टीचर से) – मैम , अगर आपका आशीर्वाद मिल जाये तो मैं अच्छे नंबर से पास हो जाऊँगा।
टीचर – हाँ हाँ , पर तुमने तैयारी तो ठीक से की है ना ?
चंकी – तैयारी ही ठीक से की होती तो , आपके पास आशीर्वाद मांगने क्यों आता।

टीचर : तुम पढ़ने में ध्यान क्यों नहीं देते हो ?
स्टूडेंट : क्योंकि पढ़ाई सिर्फ दो वजह से की जाती है। पहला कारण है डर और दूसरा कारण शौक।
बिना वजह के शौक हम पालते नहीं और डरते तो हम किसी के बाप से नहीं।

टीटू–सर , लोग हिंदी या इंग्लिश में ही क्यों बोलते है ? मैथ्स में क्यों नहीं ?
टीचर– ज्यादा 3 –5 मत करो , 9 –2 –11 हो जाओ , नहीं तो 5 –7 खींच कर दूंगा तो 6 के 36 नजर आएंगे और 32 के 32 बाहर निकल आएंगे।
टीटू– बस सर.....समझ गया , हिंदी इंग्लिश ही ठीक है , मैथ्स की भाषा तो बड़ी खौफनाक है।

टीचर : बेटा , " कबूतर " पर वाक्य बना कर सुनाओ।
छात्र : शाम को पी हुई सुबह कब उतर जाती है , पता ही नहीं चलता।
टीचर : बेहोश !!!!!

माँ – बेटा , परीक्षा में पूछे सवाल मुश्किल थे क्या ?
बेटा – नहीं माँ सवाल तो आसान थे , उनके आंसर मुश्किल थे।

बेटा – माँ दस रूपये चाहिए गरीब को देने हैं।
माँ –कहाँ है गरीब ?
बेटा – बाहर कड़ी धूप में आइसक्रीम बेच रहा है।

बेटा – पापा आप को अँधेरे से डर लगता है ?
पापा – नहीं।
बेटा – शेर से ?
पापा – नहीं ?
बेटा – बिजली कड़कने से ?
पापा – नहीं।
बेटा – मतलब आपको मम्मी के अलावा किसी से डर नहीं लगता।

टीचर – बच्चों तुम्हें पता है , भगवान कहाँ होते हैं ?
टीटू – मुझे पता है। हमारे घर के बाथरूम में।
टीचर – तुम्हें कैसे पता ?
टीटू – मेरे पापा सुबह रोज नहाने जाते है तो कहते हैं –
हे भगवान , तुम अभी तक अंदर ही हो।

टीचर मैंने टीटू का टिफिन खा लिया
टीचर – टीटू , घर जाकर कहोगे तो नहीं , मैंने तुम्हारा टिफिन खा लिया।
टीटू – नहीं सर , मैं कह दूंगा मेरा टिफिन कुत्ता खा गया।

पहचानें अपनी भारतीय संस्कृति

दो पक्ष–कृष्ण पक्ष,शुक्ल पक्ष

तीन ऋण– देव ऋण, पितृ ऋण, ऋषि ऋण

चार युग– सतयुग,त्रेतायुग,द्वापरयुग, कलियुग!

चार धाम–द्वारिका,बद्रीनाथ,जगन्नाथ पुरी, रामेश्वरम धाम !

चारपीठ–शारदा पीठ (द्वारिका),ज्योतिषपीठ (जोशीमठ बद्रीधाम), गोवर्धन पीठ(जगन्नाथपुरी), श्रृंगेरीपीठ।

चार वेद–ऋग्वेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद, सामवेद !

चार आश्रम –ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास

चार अंतःकरण –मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार !

पंच गव्य –गाय का घी, दूध, दही,गोमूत्र, गोबर !

पंच देव –गणेश, विष्णु, शिव, देवी,सूर्य !

पंच तत्त्व –पृथ्वी,जल, अग्नि, वायु, आकाश !

छह दर्शन –वैशेषिक, न्याय,सांख्य,योग, पूर्व मीमांसा, उत्तर दक्षिण मीमांसा !

सप्त ऋषि –विश्वामित्र, जमदग्नि,भरद्वाज, गौतम, अत्रि, वशिष्ठ और कश्यप!

सप्त पुरी –अयोध्या पुरी,मथुरा पुरी, माया पुरी (हरिद्वार), काशी, कांची शिव कांची, विष्णु कांची, अवंतिका और द्वारिका पुरी !

अष्टांग योग– यम, नियम, आसन,प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि !

अष्ट लक्ष्मी –आद्य, विद्या, सौभाग्य,अमृत, काम, सत्य, भोग, योग लक्ष्मी !

नव दुर्गा–शैल पुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायिनी,कालरात्रि, महागौरी एवं सिद्धिदात्री

दस दिशाएं –पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ईशान, नैऋत्य, वायव्य, अग्नि, आकाश एवं पाताल !

मुख्य ११ अवतार –मत्स्य, कच्छप, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम,श्री राम, कृष्ण, बलराम, बुद्ध,कल्कि !

बारह राशि – मेष, वृषभ, मिथुन,कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ, कन्या !

बरह माह– चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन

बारह ज्योतिर्लिंग– सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, ओंमकारेश्वर, बैजनाथ, रामेश्वर, विश्वनाथ, त्रयंबकेश्वर, केदारनाथ, घृष्णेश्वर, भीमाशंकर, नागेश्वर

पंद्रह तिथियाँ– प्रतिपदा,द्वितीय,तृतीय,चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी,दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा/अमावास्या !

स्मृतियां– मनु, विष्णु, अत्री, हारीत, याज्ञवल्क्य, उशना, अंगीरा, यम, आपस्तम्ब, सर्वत,कात्यायन, ब्रहस्पति, पराशर, व्यास, सांख्य, लिखित, दक्ष, शातातप, वशिष्ठ

भारतीय संघ की राजभाषा

देवनागरी लिपी में लिखी हिन्दी

राजभाषा नियम, 1976

हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, यथा - क, ख, ग में परिभाषित किया गया है

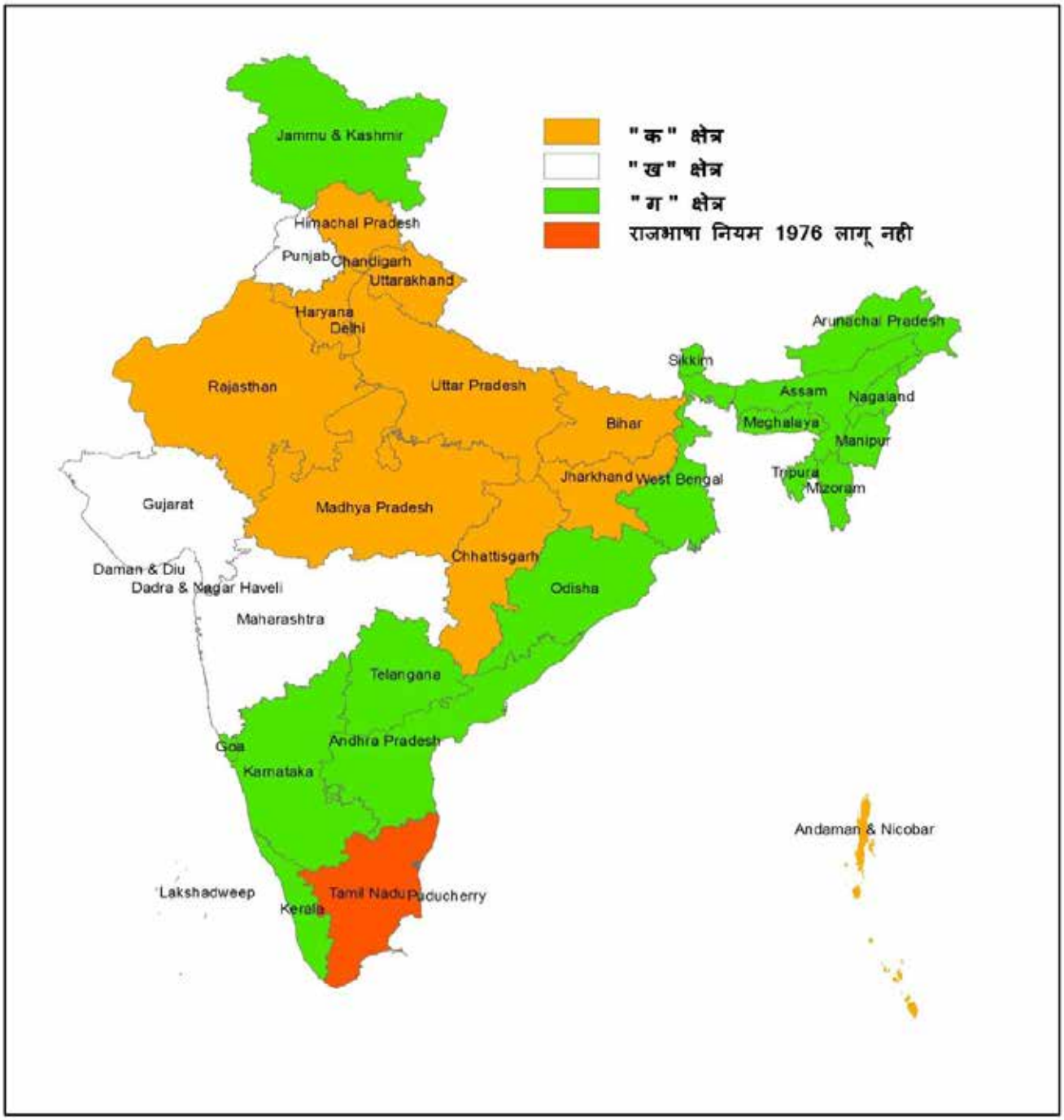

क्या आप जानते हैं?

राजभाषा विभाग ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एनकोडिंग की एकरूपता को ध्यान में रखते हुए सभी केंद्रीय कार्यालय को कंप्यूटरों में यूनिकोड एनकोडिंग प्रणाली अथवा यूनिकोड समर्थित ओपन टाइप फोंट का ही प्रयोग करने का निदेश दिया है। अतः सभी मंत्रालय एवं अधीनस्थ कार्यालय/उपक्रम/सरकारी बैंक आदि को केवल यूनिकोड समर्थित फोंट एवं यूनिकोड एनकोडिंग के अनुरूप सॉफ्टवेयर का ही प्रयोग करना है।

यूनिकोड एक टेक्नोलॉजी मानक है । यूनिकोड मानक में विश्वस्तर पर एवं प्रचलित सभी लिपियों के वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर के लिए यूनिक कोड प्रदान किया गया है। प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष संख्या प्रदान करता है, चाहे कोई भी कम्प्यूटर प्लेटफॉर्म, प्रोग्राम अथवा कोई भी भाषा हो। यूनिकोड मानक को एपल, एच.पी., आई.बी.एम., माइक्रोसॉफ्ट, ऑरेकल, सैप, सन, यूनिसिस जैसी उद्योग की प्रमुख कम्पनियों और कई अन्य ने अपनाया है। यूनिकोड आई.एस.ओ/आई.ई.सी. 10646 (ISO/IEC 10646) एक अंतर्राष्ट्रीय मानक है।यह कई संचालन प्रणालियों, सभी आधुनिक ब्राउजरों और कई अन्य उत्पादों में उपलब्ध है। यूनिकोड 10.0 वर्जन में कुल 136,690 वर्णों को जोड़ा गया है, कुल 139 स्क्रिप्ट ।भारतीय भाषाओं के लिए यूनिकोड एनकोडिंग के लिए ञ्ज्थ्-8 का प्रयोग होता है ।

कंप्यूटर पर एकरूपता के लिए एकमात्र विकल्प कैरेक्टर इनकोडिंग के लिए यूनिकोड है । इससे हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर पर अंग्रेजी की तरह ही सरलता से 100% कार्य किया जा सकता है। कंप्यूटर पर हिंदी में सभी कार्य जैसे दृ वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा प्रोसेसिंग, ई-मेल, वैबसाइट निर्माण आदि किए जा सकते हैं, हिंदी में बनी फाइलों का आसानी से आदान-प्रदान तथा हिंदी की-वर्ड पर गुगल या किसी अन्य सर्च इंजन पर सर्च कर सकते हैं ।

कृपया ध्यान रखें

- हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में ही देना अनिवार्य है।
- राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अनुसार सभी परिपत्र, सामान्य आदेश, निविदा सूचनाएं, विज्ञापन, अनुबंध, करार आदि द्विभाषी (हिंदी–अंग्रेजी में) जारी किए जाने अनिवार्य हैं । यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी पत्र पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की है ।
- 'क' तथा 'ख' क्षेत्र की राज्य सरकारों, व्यक्तियों एवं अन्य पार्टियों को पत्र हिंदी में भेजे जाने चाहिए ।
- सभी प्रकार के फार्म, मैनुअल, कोड, लेखन सामग्री द्विभाषी रूप में मुद्रित किया जाना अनिवार्य है ।
- रबर की मोहरें, नामपट्ट, साइन बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में तैयार किए जाने चाहिएं ।
- 'क' तथा 'ख' क्षेत्र को भेजे जाने वाले लिफाफों पर पता हिंदी में लिखें।

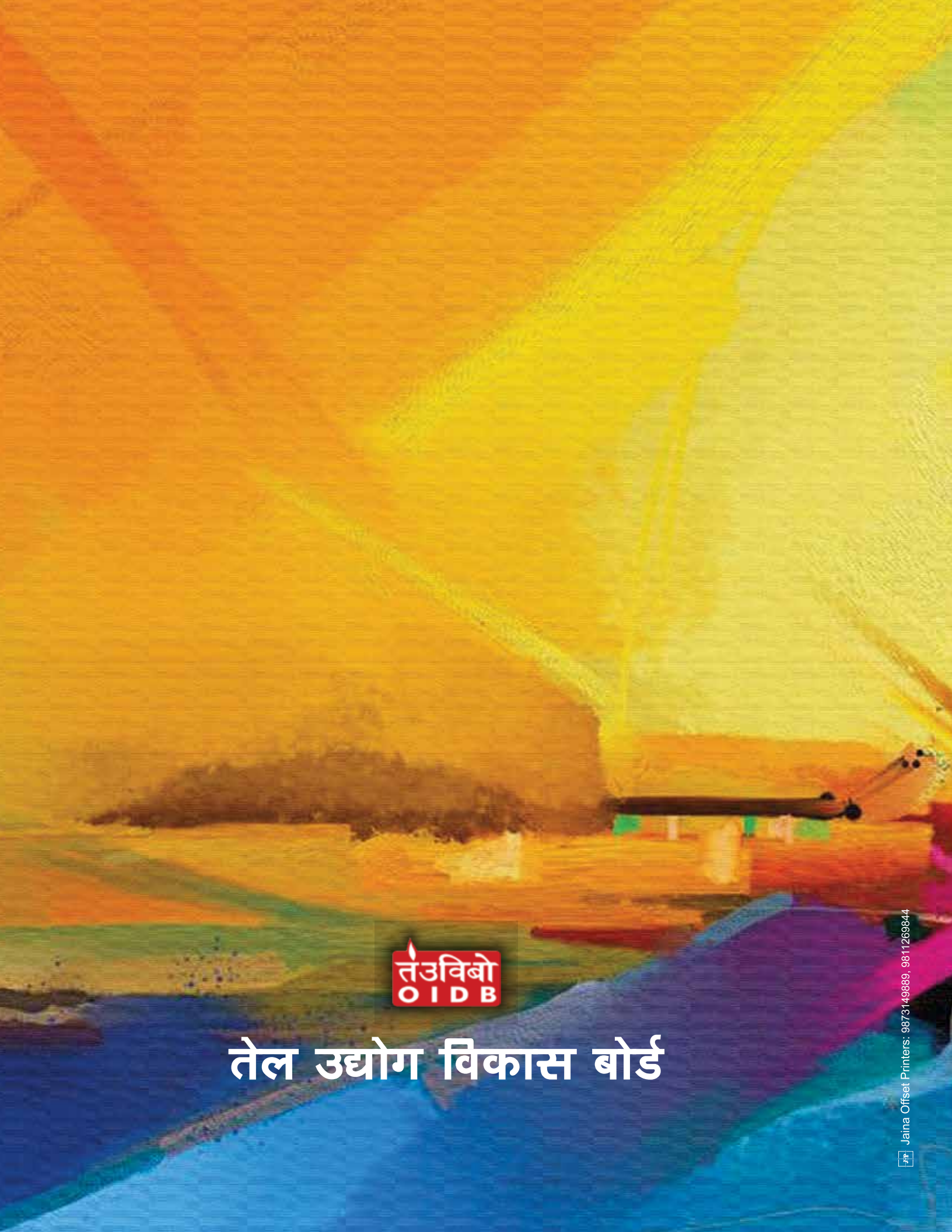

तेल उद्योग विकास बोर्ड

Jaina Offset Printers: 9873149889, 9811269844